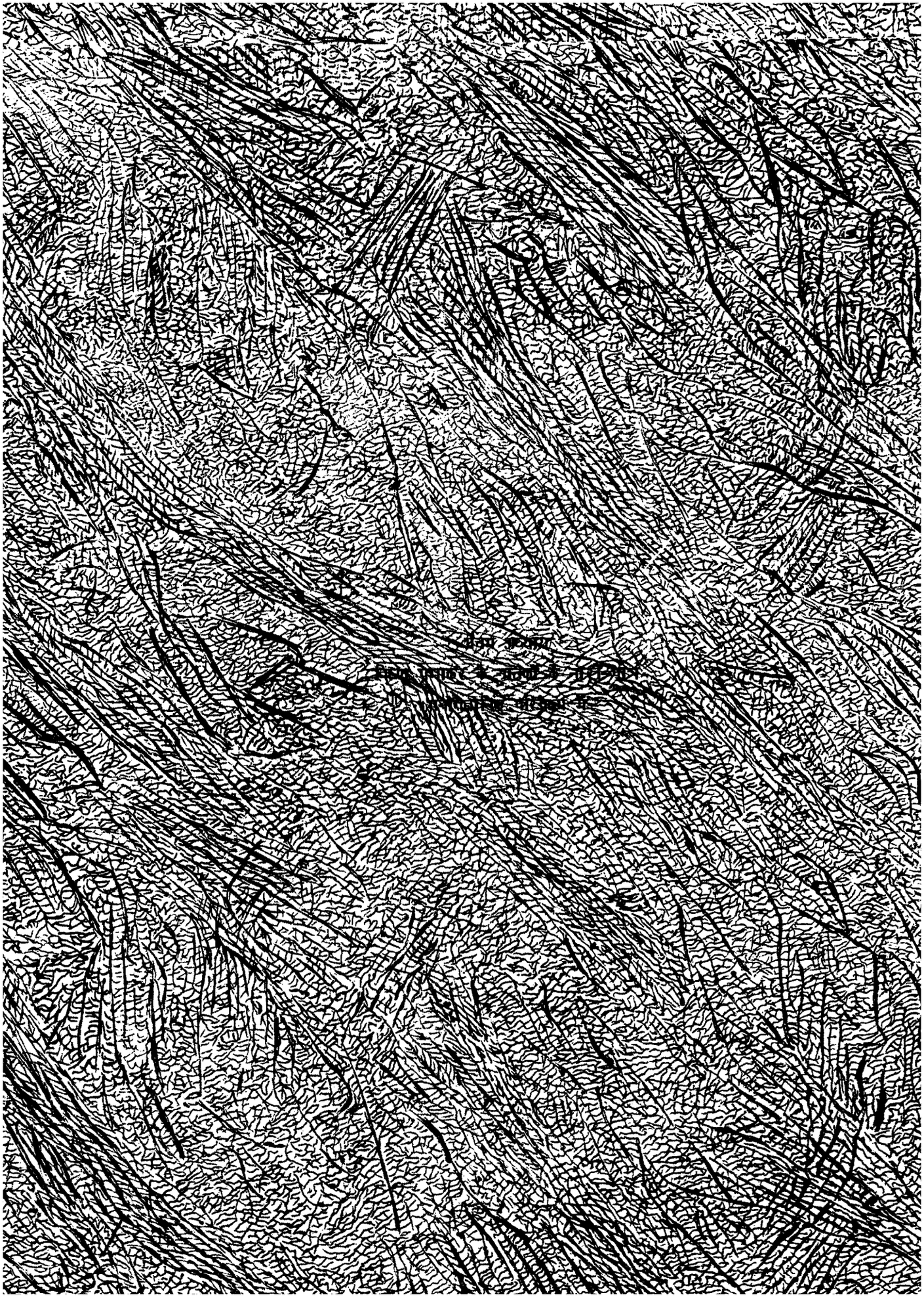

पंचम अध्याय

विष्णु प्रभाकर के नाटकों के नारी-पात्र मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में

भूमिका :

नाटक में प्रमुख तत्वों में पात्र और चरित्र सृष्टि का विशेष महत्त्व रहा है। नाटक की रचना विधान में पात्रों का इसलिए महत्त्व है कि बिना पात्रों के नाटक साकार नहीं हो सकता। साहित्य का केन्द्रबिन्दु मानव है और मानव में भी नारी की अपनी विशिष्टता है। इस दृष्टि से नाटक में नारी मनोविज्ञान को विश्लेषित, विवेचित किया जा सकता है। नाटक में पात्रों के चरित्र सृष्टि का स्थान सर्व प्रमुख है। साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा नाटकीय चरित्रों में एक यह विशिष्टता होती है कि नाटक में वस्तुत: चरित्र उस व्यक्ति का होता है जो नाटक का पात्र है। आजकल कथावस्तु की अपेक्षा नाटक में पात्र और चरित्र सृष्टि को विशेष महत्त्व दिया जाता है। " नाटक में पात्र सर्व प्रमुख तत्त्व होता है और कथानक गौण "[1] नाटक मंचीय होने के कारण पात्रों के स्वभावत: कार्यव्यापार आदि को मंचपर प्रभावान्विती की दृष्टि से विशेष महत्त्व है। मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में पात्रों की मनोदशाएँ विविध भावभंगिमाओं में दर्शायी जा सकती है। नाटक की यह सबसे बड़ी रंगमंचीय उपलब्धि है। नाटक में पात्र सृष्टि का महत्त्व ध्यान में रखकर मनोविज्ञान की परिधि में उसका समूचित विश्लेषण डॉ. शशिभूषण सिंहल ने किया है। उनका कथन है " आज का हिन्दी नाटक आकार में लघु हो चला है। यह सूक्ष्म मनोविश्लेषण पर बल देने लगा है। यह पाठ्य होते हुए भी अपने भीतर नाटकीयता का प्रबल तत्त्व समोकर अभिनय की नयी-नयी संभावनाओं को जन्म दे रहा है। "[2] आधुनिक हिन्दी नाटक साहित्य में पात्रों को मनोवैज्ञानिक धरातल पर चित्रीत करने में उपेन्द्रनाथ अश्क (अंजोदीदी), मोहन राकेश (आषाढ का एक दिन, आधे-अधूरे), सूरेन्द्र वर्मा (सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, आठवा सर्ग), डॉ. लक्ष्मीनाराण लाल (दर्पण, करप-यू) आदि नाटककारों का योगदान विशेष महत्त्वपूर्ण है। विष्णु प्रभाकरजी भी मनोवैज्ञानिक नाटककार के रूप में एक अग्रणी नाटककार है।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

विष्णु प्रभाकर के मनोवैज्ञानिक नारी पात्र :

विष्णु प्रभाकर जी वास्तव में नारी मनोविज्ञान के पारखी है। उनके नाटकों के नारी पात्रों का अध्ययन करनेपर यह पता चलता है कि उन्होंने मनोविज्ञान के धरातल पर नारी पात्रों के विविध मनोविकारों को यथार्थ रूप में चित्रीत किया है। आमतौर पर नारी स्वभाव की या मन की जो विशेषताएँ होती है वे किसी न किसी पात्रों में स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ती है। उनके नारी पात्रों में मुख्यतया नाटककार ने वात्सल्य, ईर्ष्या, बदले की भावना, हृदय परिवर्तन, अन्धविश्वास, आत्मग्लानि, पागलपन, विद्रोह, प्रेम, कुण्ठा, मन्मौज, द्विधा मन, आदि मनोविकारों को अभिव्यकत किया है। जिसकी वजह से नारी मनोविज्ञान की विशिष्टता स्पष्ट होती है।

मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति का व्यक्तित्व भी महत्वपूर्ण माना जाता है। नारी का व्यक्तित्व भी इसका अपवाद नहीं। विष्णु प्रभाकरजी ने उपर्युक्त मनोविकारों के आधार पर जहाँ नारी के मन को विश्लेषित किया है, वहाँ दूसरी ओर उन्होंने अपने नाट्यों के नारी पात्रों में खण्डित व्यक्तित्व को भी स्थान दिया है। क्या नारी ? क्या पुरूष ? आज के सभी पात्र किसी न किसी रूप में टूट जाते हैं। उनका व्यक्तित्व विघटित होता है। नाटककार ने इस दिशा में भी अपने नाटकों के कुछ नारी पात्रों को खण्डित व्यक्तित्व के रूप में अंकित किया है। वास्तव में " खण्डित-व्यक्तित्व मानव के व्यक्तित्व की एक असामान्य (Abnormal) अवस्था तथा बहुआयामी मानसिक-स्नायविक विकृति है जिसमें उसके समेकित व्यक्तित्व की एकात्मता भंग हो जाती है और परिणाम स्वरूप कभी कभी उसके बहुविध -(Multiple) विघटित रूप बन जाते हैं, जो सापेक्षतया एक दूसरे से विसंगत होते हैं। "[3] मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में विष्णु प्रभाकर के नारी पात्रों को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से दो वर्गों में बाँटा जा सकता है। 1) प्रधान मनोवैज्ञानिक नारी पात्र 2) गौण मनोवैज्ञानिक नारी पात्र। निम्नलिखित आलेख देखा जा सकता है।

मनोवैज्ञानिक नारी पात्र			
प्रधान नारी पात्र ↓	गौण नारी पात्र ↓		
1) डॉक्टर अनीला	1) मनीषा	7) मालवी	13) पूनम
2) टगर	2) शारदा	8) नीलिमा	14) नीरू
3) उमा	3) जैनेट	9) रामकली	15) सावित्री
4) शान्ता	4) अन्विता	10) महादेवी	16) अम्मुकट्टी
5) करूणा	5) सुरेखा	11) विमला	17) मालती
6) आनन्दी	6) भिक्षुणी	12) रीता	18) रंजना का प्रेत
7) बिन्दु			

प्रधान मनोवैज्ञानिक नारी पात्र :

1) डॉ. अनीता : (डॉक्टर)

डॉक्टर अनीला जो " डॉक्टर " नाटक की प्रमुख नारी पात्र है। वह कुशल कर्तव्यदक्ष डॉक्टर है। सारे शहर में लोग उसकी प्रशंसा करते हैं। वह मरीज का बड़ी कुशलता से दिलोजान से ईलाज करती है। नाटककार ने डॉ. अनीला को वात्सल्य, ईर्ष्या, प्रतिशोध, हृदय परिवर्तन, खण्डित व्यक्तित्व आदि मनोभावों को सुन्दर शब्दों में अंकित किया है।

वात्सल्य :

डॉ. अनीला ममतामयी नारी है। इससे पहले वह गँवार मधुलक्ष्मी थी। उसकी शादी सतीशचंद्र शर्मा से हुयी। आँखों में सुनहरे संसार के सपने लेकर मायके से जुदा होकर नयी उमंग से वह ससुराल आयी। हँसी खुशी से वह दिन गुजारती है। शादी से पहले बहू बेटी शादी के बाद बहूरानी बनती है यह तो दुनिया का दस्तुर है। कुछ दिन गुजरने के बाद वह एक बच्ची की माँ बनी। उसके अरमानों की झोली भरी। वह हरपल अपनी शशि बच्ची का खयाल रखती है। वह साक्षात वात्सल्य है। वह दिलोजान से अपनी बच्ची को चाहती है। क्योंकि उसके सीने में एक माँ का दिल है। एक पल भी वह अपनी बच्ची से जुदा नहीं होना चाहती। उसे अपनी शशी बच्ची जान से प्यारी है। कुछ दिन गुजरने के बाद उसके पति अफसर बने। तो उनकी नीयत बदली। वे गँवार मधुलक्ष्मी को अपने योग्य नहीं समझने लगे। झूठी शान के लिए उन्होंने मधुलक्ष्मी का त्याग किया। पति के इस सलूक से उसके दिलपर गहरी चोट लग जाती है। फिर भी वह सब्रसे काम लेती है। अपनी बच्ची को साथलेकर वह ससुराल से जुदा होती है। बड़ी लगन से अभ्यास करके वह डॉक्टर बन जाती है। आज की वह सबसे बडी मशहूर डॉक्टर है। फिर भी जब भी उसे अपनी लाडली शशि की याद आती है तो वह फौरन अपनी बच्ची के पास जाती है। अस्पताल से रूखसत होकर शशि के पास जाती है। साक्षात वह वात्सल्य की मूर्ति है। जब वह शशि से मिलके वापस आती है। नयी मरीजा जिसके सरपर मौत सवॉर है उसका ऑपरेशन करना चाहती है। उससे पहले उसे डॉ. केशव का तार आता है " (तेजी से तार पढ़ती है) पैर फिसल जाने के कारण शशि गिर पड़ी। दाहिने पैर की हड्डी टूट गयी। प्लास्टर हो गया है। चिन्ता की कोई बात नहीं, मैं आ रहा हूँ (बैठकर) हड्डी टूट गयी। ओह !..."[4] वह एकदम घबरा जाती है। लेकिन कुछ पल के लिए वह सब से काम लेती है। नयी मरीजा जिसे प्लूरिसी की बिमारी है। जिससे मौत आँख मिलौली कर रही है। उसका ऑपरेशन करना जरूरी है। फिर भी ऑपरेशन करने से पहले उसे शशि का खयाल आता है तो वह किराये की टॅक्सी लेकर बच्ची के पास जाने के लिए हवाई अड्डेपर पहुँचती है। फिर दिल कडा करके और अस्पताल आती है। कुशलतासे ऑपरेशन करती है। अब

तो बच्ची के पास जायेगी। इस तरह डॉ. अनीला साक्षात वात्सल्य की मूर्ति है।

ईर्ष्या :

डॉ. अनीला 35-36 साल की युवती है। जो शहरकी सबसे बड़ी मशहूर डॉक्टर है। उसे अपना फर्ज दिलोजान से प्यारा है। मरीजों के प्रति उसके दिल में दया एवं ममता पनपती है। लेकिन इससे पहले वह गँवार मधुलक्ष्मी थी। उसकी शादी सतीशचंद्र शर्मा से हुयी। वह कम पढ़ी लिखी है। हँसी खुशी से कुछ दिन गुजर गये। वह एक बच्ची की माँ बनी। उसके पति एक दिन बड़े अफसर बने। जब से वे इंजीनियर बने उनका मन परिवर्तन हुआ। अब वे गँवार मधुलक्ष्मी से नफरत करने लगे। वे उसे अपने योग्य नहीं मानते। उन्होंने उसे त्याग दिया। बदनसीब मधुलक्ष्मी की मानों सारे सपने चकनाचूर हो गए। उसके दिलपर गहरी चोट लगी। सारे गम बर्दाश्त करती है। पति से जुदा होकर अपनी बच्ची को साथ लेकर घर से निकलतीहै। बडी लगन से अभ्यास करके वह डॉक्टर बनती है। वह कुशल कर्तव्यदक्ष डॉक्टर बन जाती है। मरीजों को मौत के मुँहमें से वापस लाना उसके लिए दाए नहीं तो बाए हाथ का खेल है। जब उसे अपनी बच्ची की याद आती है तो वह बच्ची शशि के पास जाती है। जब वह बच्ची के पास गयी थी उसी वक्त नयी मरीजा जिसे प्लूरिसी की बिमारी है उसकी हालत पर तरस खाकर दादा ने उसे अस्पताल में दाखिल किया। नयी मरीजा सतीशचंद्र शर्मा की दूसरी पत्नी है। वह वापस आने के बाद नयी मरीजा का बेटे गोपाल को जब गौरसे देखती है। गोपाल की आँखे देखकर उसके दिल में यह शक पैदा होता है कि गोपाल और शशि की आँखों में साम्य है। यह शायद उसके पति का पुत्र होगा। उसी समय नयी मरीजा के कागजपर सतीशचंद्र शर्मा का नाम पढ़ती है। उसे डॉ. सईदा से यह पता चलता है कि सतीशचंद्र शर्मा झाँसी के रहनेवाले है वे असम से पुना आये हैं। उसे पूरा विश्वास होता है यकीनन नयी मरीजा उसकी सौतन है। उसके दिल में ईर्ष्या पैदा होती है। और ईर्ष्यालु बनकर यह फैसला करती है कि वह नयी मरीजा जो उसकी दुश्मन है उसका वह ईलाज नहीं करेगी। वह ईर्ष्यालु बनती है -

" अनीला : (एकदम तेज) मैं पूछती हूँ कि इसे किसने दाखिल किया ? किसकी आज्ञा से ?

सईदा : क्षमा करें दीदी ! यह सब दादा ने किया है। एक बार तो उन्होंने मना कर दिया था पर ....

अनीला : (पुर्वत: तेज) मैं कहती हूँ कि उन्हें निकाल दो ... ""[5]

ईर्ष्या भाव की वजह से वह भूल जाती है कि वह एक डॉक्टर है और डॉक्टर का फर्ज है मरीज का ईलाज करना।

प्रतिशोध :

. डॉक्टर अनीला जब यह राज जानती है कि नयी मरीजा जिसे प्लूरिसी की बिमारी है। मौत जिससे आँख मिचौली करती है वह उसकी सौतन है। तो वह फैसला करती है वह उसका ईलाज नहीं करेगी। वह घुस्सेकी तैश में आती है। और बदले की भावना से उसके तनबदन में आग ही आग लग जाती है। लेकिन दादा उसे समझाते है कि वह बिमार थी और नर्सिंग होम बिमारों के लिए होता है इसलिए सब जानते हुए भी उन्होंने उसे दाखिल किया है। लीला आकर कहती है कि नयी मरीजा की हालत बहुत खराब है लेकिन वह टस मे मस नहीं होती। बदलेकी भावना शोले के समान उसके दिल में भड़की है। इसलिए वह फैसला करती है वह नयी मरीजा के पास न जाएगी और न उसका ईलाज करेगी – इसका जिक्र वह नर्स जोसेफ से करती है – ' अनीला : (तीव्र होकर) मिस जोसेफ ! जो कुछ मैंने कहा, क्या वह तुमने नहीं सुना ? मैं इस वक्त नहीं जा सकती। नहीं जाऊँगी, कह दो .... "[6]

नयी मरीजा का मासूम बेटा गोपाल आकर विनंती करता है कि वह चलकर कृपया उसकी माँ का ईलाज करें। तो वह बड़बड़ाती हुयी गोपाल के साथ निकल पड़ती है। नयी मरीजा का ऑपरेशन करना अनिवार्य हो जाती है। डॉ. अनीला के दिल में यह शक पैदा होता है कि कहीं वह उसे मार डालेगी। वह दादा से कहती है – दादा और डॉ. अनीला का यह वार्तालाप देखिए –

' दादा : अपना काम। तुम डॉक्टर हो और तुम्हारा काम है ऑपरेशन करना।

अनीला : वह मैं नहीं करूँगी। कभी नहीं करूँगी। मैं उसे मार डालूँगी। "[7]

दादा उसे समझाने का प्रयास करते हैं। उसी समय सतीशचंद्र शर्मा डॉ. अनीला से मिलना चाहते हैं लेकिन बहाना बनाकर वह उससे मिलती नहीं। ऑपरेशन के दिन से पहले पौ फटने के समय वह सोचती है कि अगर ऑपरेशन किया गया तो ? इसलिये वह घरसे निकल जाती है। लेकिन घर से निकल जाने से पहले उसकी अन्तर्आत्मा चिल्लाचिल्लाकर कहती है –

" आवाज : करोगी क्या भाग जाओ। "[8]

और जाने से पहले मैं तार लिखती है – " संध्या तक पहुँच रही हूँ " ठीक है। हवाई जहाज से जाऊँगी। (फिर सोच में पड जाती है।) ठीक है न। मैंने ठीक किया न। मुझे जाना ही चाहिए। रह गयी तो मुझे विश्वास है कि मैं उसे मार डालूँगी। जरूर मार डालूँगी। मुझे इस हत्या से अपने को बचाना ही चाहिए। अब तो अच्छा बहाना है। शशि को चोट लगी है। मैं हत्या नहीं करना चाहती। मैं चली जाऊँगी। डॉ. केशव आ ही रहें हैं। सईदा ऑपरेशन कर देगी और ...." [9] हवाई अड्डेपर जाने के बाद डॉ. अनीला को यह बात मालूम हुयी कि हवाई जहाज एक घण्टे बाद आयेगा। तो वह अस्पताल वापस आती है।

लेकिन टॅक्सी ड्राइवर ने रामू को बताया कि शायद डॉक्टर अनीला पागल हो जायेगी। उसका उस वक्त हाल कैसे था वह बेचैन थी यह रामू बताता है।

" केशव : डॉ. अनीला हवाई अड्डा पर गया।

रामू : हमकूँ टैक्सी ड्राइवर बोलता, तुम्हारा डॉक्टर पागल हो जाएगा। हवाई अड्डेपर पहुँचकर अन्दर गया। वहाँ के बाबू ने पूछा – आप जाएगा ? तो बोला, नई भाई, हमकूँ नहीं जाना। डॉ. केशव को आना या आया ? बाबू बोला – डॉक्टर अभी कैसे आने सकता, अभी तो कोई जहाज नहीं आता, एक घण्टें बाद आएगा।

सईदा : फिर

रामू : ड्राइवर कहता ... फिर दीदी लौट आया। बोला हम वापिस जाएँगा। और फिर रास्ते में बोलने आया, हम ऑपरेशन करेगा, जरूर करेगा, जरूर मार डालेगा, जरूर बदला लेगा। "[10]

इसतरह वह नयी मरीजा के प्रति बदलेकी आग में जलती है। उसे चैन नसीन नहीं होता। वह उसका खून करना चाहती हे। वह उसके दिल में नयी मरीजा के प्रति बदले की भावना है इससे डॉ. केशव परिचित है। उनका यह वार्तालाप देखिए –

" केशव : (वही दृढ स्वर) अन्दर जितनी गहरी पीड़ा होती है। उपर तुम उतनी ही करूण बनती हो, उतनी ही हँसती हो। लेकिन तुम्हारी करूणा, तुम्हारी मुस्कान, तुम्हार हास्य, इन सबका आधार है वही चुनौती ने आज तुम्हें कायर बना दिया है क्योंकि तूम्हारे भीतर बदला लेने की भावना जाग उठी है। (अनीला काँपती है)... लेकिन जब तक इसका रूपान्तर नहीं होगा ... "[11]

अंत में डॉ. अनीला अपना फैसला डॉ. केशव को बताती है।

अनीला : (एकदम) हाँ, मैं यहीं करूँगी। मैं कहती हूँ मैं उसे मार डालूँगी। सच केशव, मैं यही निश्चय करके लौटी हूँ .... "[12]

हृदय परिवर्तन :

डॉ. अनीला फैसला करती है कि उसे बदला लेना है। इसलिये वह नयी मरीजा जो उसकी सौतन है उसका ईलाज नहीं करेगी। इसलिए वह घर से निकल जाती है वह भी चोरी चोरी से। लेकिन हवाई अड्डेपर जाने के बाद उसका मनपरिवर्तन होता है। वह एक डॉक्टर है उसे अपना जमीर एवं फर्ज प्यारा है क्योंकि वह एक कुशल कर्तव्यदक्ष डॉक्टर है। इसलिए वहाँ से वापस मरीजा को बचाने के लिए अस्पताल आती

है। उसका मन परिवर्तन होता है। वह नयी मरीजा की जान बचाना चाहती है। इसका ऑपरेशन करने के लिए वह वापस आयी है – वह सईदा से कहती है –

" अनीला : रामू ने ठीक कहा। मैं जाना तो चाहती थी पर फिर सोचा (बैठ जाती है।) ऑपरेशन करे ही जाऊँगी। "[13]

ऑपरेशन की घडी करीब आती है। डॉ. अनीला बड़ी कुशलता से काम कर रही है। उसके पास आत्मविश्वास है। ऑपरेशन शुरू है। इतने में उसकी अर्न्तशाला चिल्लाचिल्लाकर कहती है –

आवाज – डॉ. अनीला ! यह सुनहरी अवसर है। अपनी इच्छा पूरी करो। अपना बदला लो, नारी के अपमान का बदला लो ... सूनो अनीला ! सुनो ! मैं मधुलक्ष्मी हूँ, मुझे भूलो मत। मैं ही तुम्हारे जन्म का, तुम्हारी प्रगति का, तुम्हारी शौहरत का कारण हूँ। मैं नारी का बदला चाहती हूँ। मैं पुरूष को तडफते देखना चाहती हूँ। वह जाने दो रक्त ... निकल जाने दो प्राण ... नस नाडियों को बन्द मत करो .... सईदा को परे हटा दो वह तुम्हारी शत्रू है। तुम सुनती नहीं .... तुम सुनती नहीं, अनीला! अनीला ! देखो, देखो केशव की ओर देखो। इस गालब्लेडर को देखो, कैसा खराब है, न, न, इसे काटो मत, इसे काटो मत (तीव्र स्वर) नहीं नहीं रूको, रूको, तुम सुनहरी अवसर खो रही हो, तुम आत्महत्या कर रही हो, तुम शत्रू को प्राण दे रही हो, तुमने इसे मार डालने का निश्चय किया था, तुमने सईदा को नहीं हटाया, तुमने केशव की बात मानी (अल्प विराम, जैसे धौंकनिया चलती हों, फिर एकदम तेज) अब भी अवसर है, छोड दे, फोरसेप्स अन्दर छोड दे, सी मत, सी मत, ओह ! ओह ! तू नहीं सुनती, नहीं सुनती, ओह ! तूने मुझपर छूरी चला दी, तूने मधुलक्ष्मी की हत्या कर दी, तू अपने अपमान को भूल गयी, अपनी प्रतिज्ञा को भूल गयी। "[14]

इसतरह उसकी अर्न्तशाला चिल्ला चिल्लाकर करती है। (पृ. 199) यह समय है बदला ले। लेकिन कुशल कर्तव्यदक्ष डॉ. अनीला संयम से काम लेती है। उसे अपना डॉक्टरी फर्ज एवं कर्तव्य प्यारा है। उसका मन परिवर्तन होता है। कुशलता से संयम से नयी मरीजा का ऑपरेशन करती है। उसे मौत के मुँहमें से वापस लाती है।

खण्डित व्यक्तित्व :

डॉ. विष्णु प्रभाकरने डॉ. अनीला को मनोविज्ञान के धरातलपर खण्डित व्यक्तित्व के रूप में बड़ी कुशलता से प्रस्तुत किया है। शादी से पहले डॉ. अनीला एक गँवार युवती अर्थात मधुलक्ष्मी थी। मधुलक्ष्मी वास्तव में भोलीभाली और साथ ही साथ अपने पति से प्रेम करनेवाली एक आदर्श युवती थी यह उसके व्यक्तित्व का एक पहलु हो जाता है। वह एक जिद्दी स्त्री है। वह भरसक प्रयत्न के उपरान्त एक कुशल

डॉक्टर बन जाती है और अपनी सौतन का आपरेशन बड़ी कुशलता से करती है। डॉक्टरी पेशा को वह अपना फर्ज मानती है और उसे निभाती है। इसप्रकार मधुलक्ष्मी से डॉ. अनीला बन जाती है। उसके व्यक्तित्व के ये दो विभाजीत रूप हैं लेकिन ये विभाजीत रूप एक दूसरे से अलग न होकर एक दूसरे के पूरक ही बन जाते हैं। यहाँ नाटककार के चरित्र चित्रण प्रणाली की यह एक विशिष्टता है।

डॉ. अनीला के खण्डित व्यक्तित्व के बारे में डॉ. चंद्रशेखर के विचार उचित मालूम पडते हैं –

" डॉक्टर " में विभाजीत व्यक्तित्व के खंडो के परस्पर संघर्ष है। परंतु श्री विष्णु प्रभाकर ने उसे भावना और कर्तव्य के संदर्भ में उभारा है। ये संदर्भ समकालीनता से जुड़े हैं। समकालीन विभाजन की ताजा पहचान इन द्वारा नहीं मिलती है। विघटित व्यक्तित्व का पूर्व खंड मधुलक्ष्मी में है और उलट खंड अनीला में। पूर्व खंड उत्तर खंड के समय आत्मसमर्पण करता है और आत्मपहचान की प्रक्रिया खंडित हो जाती है। यह हमारा समकालीन यथार्थ लगभग नहीं है। "[15]

2) टगर :

प्रतिशोध : (टगर)

" टगर " नाटक की नायिका टगर है जो स्वच्छंद आकर्षक नारी है। इससे पहले वह भोलीभाली सरल शर्मिली नारी रश्मि थी। पिताने बड़ी खुशीसे इसकी शादी शेखर से करा दी। शेखर एक महान साहित्यकार है। शेखर टगर की सुन्दरता का बयान काव्यमय भाषा में करता है। इसे बार बार उगता है कि टगर उससे साहित्यिक बातें करे। काफ्का, कामू और सार्त्र के दर्शनपर बहस करें। बेचारी टगर ने बहुत कोशिक की लेकिन अंत में हार गयी। पति दुःखी हुए। एक परायी नारी ने पति के जीवन में प्रवेश किया। पति उससे प्यार करने लगे। दोनों के बीच में खाई पैदा हुआ। रश्मि ने खाई पाटने की कोशिश की लेकिन असफल रही। पति उसे घर से बाहर निकालने लगे। वह अपने ही घर में मेहमान बनी। इकदिन उसने घर छोड दिया। समय आनेपर उसने उसे तलाक दिया। बेचारी का दिल चकनाचूर हुआ। सारे गम उसने बर्दाश्त किये। उसके दिल में पति के प्रति प्रतिशोध की भावना भडक उठी। बदले की आग में वह जलती है। उसने शेखर की हत्या करने का विचार किया था। उसने यह सोच लिया था कि वह मरते दम तक पुरूष जाँति से बदला लेगी। उसकी यह धारणा हुयी थी कि पुरूष जाति गद्दार एवं दगाबाज है। पति ने उसका त्याग किया। पति ने उसे एक बार छोडा है लेकिन वह पुरूषों को बार बोर छोडकर पुरूष जाँति से प्रतिशोध लेगी इसलिए वह आगे पुरूषों को ठगाती रही। तलाकशुदा उस टगर ने ठाकूर साहब को अपनी चंगुल में फंसाया। उसकी अनोखी अदा एवं रंग रूप देखकर बूढे ठाकूर उसके इश्क में दिवाने बने। उन्होने उसे अपना प्रायव्हेट सेक्रेटरी बनाया। टगर और ठाकूर दोनों बिना शादी के एकसाथ रहते हैं। टगर ने उनके साथ

प्यार का नाटक किया। अपना उल्लू सीधा करने के लिए उसे उल्लू बनाया। जब उसे यह रहस्य मालूम हुआ कि ठाकूर भ्रष्टाचारी है। वे तस्कर व्यापारी है। अंतर्राष्ट्रीय दल के सदस्य है तो उसने ये सारी बातें जानबूझकर माथूर को बतायी। क्योंकि टगर को बदला लेना था सिर्फ पुरूष जाँति से। माथूर जो पी.डब्ल्यू.डी के सब डीविजनल अफसर थे। उन्होंने ठाकूर का रहस्य कमिशनर नाजिम साहब को बताया। नाजिम साहब के कहनेपर मेजर पुरी ने ठाकूर के दल को गिरप-तार करने का प्रयास किया। दल ने पुलिस का प्रतिकार किया। मेजर पुरी की गोली से ठाकूर मारे गये। लेकिन टगर टस से मस नहीं हुयी। उसने अपने प्यार में माथूर को पागल बना दिया। माथूर साहब भी उसे पाने के लिए बेताल होते हैं। मीठे बोल बोलकर अपनी शोख अदासे टगर ने माथूर को भी पूरा पागल बनाया। अब टगर की जिन्दगी का मकसद था कि माथूर से बदला लेना। पुरूष जाँति से बदला लेना उसका मकसद बन गया था। अब वह माथूर के साथ रहती है। अहिस्ता अहिस्ता वह माथूर से प्यार का नाटक खेलती रही। वह सोलह आने अपने मोहजाल में माथूर को फंसाती है। इक दिन उसे यह राज मालूम हो जाता है कि माथूर भी एक नंबर के भ्रष्टाचारी है। वे ठेकेदारों से रिश्वत लेते हैं। उनका भी संबंध तस्करी चोपारीयों से है। तो यह रहस्य टगर जाकर कमिशनर नाजीम साहब को बताती है। कमिशनर के कहनेपर मेजर पुरी माथूर साहब को गिरप-तार करते हैं। बाद में टगर कमिशनर नाजिम साहब के साथ रहती है, नाजिम साहब को वह सब राज बताती है कि उसने ठाकूर और माथूर के साथ क्यों ऐसा सलूक किया क्योंकि प्रतिशोध की भावना उसके दिल में भडक उठी थी। यह वार्तालाप देखिए -

" नाजिम : तुम्हें उसके पीछे नहीं जाना चाहिए था। वह शैतान है, एक के बाद एक नारी को लुभाना और छोडना उसका पेशा है। क्या आज के साहित्यकारों का यही ... ?

टगर : साहित्यकारों की बात छोड़ दीजिए। पहले मैंने भी यही सोचा था। तभी तो प्रतिहिंसा की आग भभक उठी थी। मैंने उसकी हत्या करने का विचार किया था। सोचा था, पुरूष जाति से बदला लूँगी। उसने मुझे एक बार छोडा है, मैं बार बार पुरूषों को छोडूँगी। एक के बाद एक जो मैं इन भ्रष्टाचारीयों को फँसाती चली गयी, वह मात्र संयोग नहीं था, नाजिम साहब।

नाजिम : (व्यग्र होकर) टगर ! मै फिर कहता हूँ, अब कुछ मत कहो। अब कुछ ही घण्टों में हम एक हो जायेंगे।

टगर : इसीलिए तो कह रही हूँ कि एक होने से पहले हम अपने को शुद्ध कर लें। मैंने इसलिए ठाकूर साहब को अपने जाल में फंसाया था। मेरा विचार जासूसी करना नहीं

था पर करनी पड़ी। मुझे खुशी हुई क्योंकि आसानी से पुरूष से बदला लेने का अवसर मिल गया। मैं माथूर साहब की ओर भी इसीलिए खिंची, मेरे लिए वह माथूर नहीं था, केवल पुरूष था। शेखर का ही एक रूप ... ।"[16]

आत्मग्लानि :

टगर का पूर्व नाम रश्मि वर्मा था। वह भोली भाली एवं आकर्षक युवती है। उसका व्यक्तित्व कुछ अलग ही था। उसे देखकर सारे प्रभावित होते हैं। पिताने उसकी शादी शेखर नाम के युवक से की। उसे बेहद खुशी आयी। पति उससे साहित्यिक बाते करना चाहते हैं। लेकिन पति से साहित्य एवं दर्शन पर बहस करना उसके बस की बात नहीं। परायी नारी ने शेखर को प्रभावित किया। वे उससे घृणा एवं नफरत करने लगे। उन्होंने उसे घर से बाहर निकाला। एक दिन उसे तलाक दिया। जैसे थोडीसी ठेस लगने के बाद शीशा भी चकनाचूर होता है वैसे उसके संसार के सतरंगी सपने मिट्टी में मिल गये। उसके दिल में पुरूष जाँति के प्रति बदले की भावना पैदा हुयी। बदले की आग में वह जलती है। मीठे बोल बोलकर वह ठाकूर साहब को अपने चंगुल में फंसाती है। अनोखी अदा देखकर बूढे शौनीन रंगीले ठाकूर साहब मानों दिवाने बनते हैं। वे उसे अपनी प्राइव्हेट सेक्रेटरी बनाते हैं। उसकी जिन्दगी का मकसद है सिर्फ पुरूष जाँति से बदला लेना। जब उसे रहस्य समझाता है कि ठाकूर साहब एक नम्बर के भ्रष्टाचार है। उनका तस्कर व्योपारियों के दल से संबंध है। इतना ही नहीं तो वे आंतरर्राष्ट्रीय दल के सदस्य है। यह राज जाकर वह कमिशनर नाजिम को बताती है। कमिशनर के ईशारेपर मेजर पुरी उसे गिरफ्तार करना चाहते हैं। अंत में मारे जाते हैं। टगर टस से मस नहीं होती। बाद में वह पी.डब्ल्यु.डी के सब डीविजनल अफसर माथूर के साथ रहती है। उसे भी अपने प्रेम में उल्लू बनाती है। प्यार का नाटक माथूर के साथ खेलती है। जब उसे यह राज समझाता है कि ठेकेदारों से माथूर रिश्वत लेते हैं। तस्करी व्योपारी से उनका भी संबंध हे। तो वह कमिशनर को जाकर सारा रहस्य बताती है। मेजर पुरी माथुर को गिरफ्तार करते हैं लेकिन जब से माथूर गिरप-तार हुए। तब से उसका मनपरिवर्तन होता है। उसे ऐसा अहसास होता है कि वह अपने ही जाल में फंस गयी है। उसे आत्मग्लानि होती है। उसे अपनी करनी पर पछतावा होता है। वह फिर भी अब नाजिम साहब के साथ रहती है। दोनों जल्द ही शादी करनेवाले हैं। लेकिन आत्मग्लानि की वजह से वह अब किसी से शादी करना नहीं चाहती। उससे पहले नाजिम साहब ने उसे यह राज बताया था कि वे भी शादी शुदा है लेकिन उनकी पत्नी और उनके मन का मेल नहीं हुआ इसलिए मिलन का अभाव ही उसकी मृत्यु का कारण बना। और टगर को विमला जो डॉक्टर की पत्नी है यह बताती है कि उसके पहले पति शेखर को नाजिम साहब ने टगर को बदनाम करने के लिए ही बुलाया है। यह सब राज जानने के बाद उसे पूरी आत्मग्लानि होती है

वह पक्का वादा करती है कि इसके बाद वह किसी को नहीं फंसायेगी। वह नाजिम साहब से कहती है – " (पूर्वत:) तुम नहीं जानतें। (अल्प विराम) माथूर साहब की गिरप–तारी के बाद मुझे लगा कि मैं अपने ही बिछायें जाल में फंस गयी हूँ। यह खेल मात्र एक दम्भ है, एक छल। नहीं, यह खेल मैं अब और न खेल सकूँगी। "[17]

नाजिम साहब उसे बार बार मनाते है कि वे सिर्फ उसे अपना बनाना चाहते हैं। लेकिन टगर की आत्मग्लानि का स्वर और भी उभर जाता है। वह माथूर से कहती है, " यही होगा। तुम भी सोचते हो। तुम्हारे साथ रहकर मैंने यही जाना है कि हम अब और अधिक अपने को न छलें। उस दिन मैंने स्पष्ट नहीं कहा था लेकिन आज कहती हूँ कि मैं शेखर को निरन्तर प्यार करती रही हूँ। मेरा यह प्यार ही तो मुझसे यह सब कुछ कराता रहा है। ठाकूर और माथूर सब उसी प्रेम की सृष्टि है। "[18]

डॉ. विष्णु प्रभाकर जी ने टगर के चरित्र चित्रण में मनोविज्ञान के धरातल पर उसके प्रतिशोध, आत्मग्लानि मनोविकारों को जो चित्रीत किया है वो मनोविज्ञान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

3) उमा (बन्दिनी) :

" बन्दिनी " नाटक की " उमा " प्रमुख नारी पात्र है। वह ममतामयी नारी है। वात्सल्य की साक्षात मूरत है। हालात से अन्धविश्वास का शिकार बन जाती है। नाटककार विष्णु प्रभाकर जी ने उमा के वात्सल्य, दमन, अन्धविश्वास, आत्मग्लानि, खण्डित व्यक्तित्त्व आदि मनोविकारों को अंकित किया है। जो मनोविज्ञान की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

वात्सल्य :

" बन्दिनी " नाटक में जो उमा है वह नाटक की मुख्य नारी पात्र है। वह ममतामयी नारी है। वात्सल्य की साक्षात मूर्ति है। जब वह 9–10 वर्ष की बच्ची थी। माता पिता ने बडे नाजों में उसे पाला था। वह संजोग से जमींदार परिवार में ब्याही गयी। माँग में सिंदूर भरके हाथों में मेहंदी रचाकर बालिका वधू बनके वह भोलीभाली मायके से जुदा होकर ससुराल आयी। उसके देवरानी तो उसे अपनी बेटी मानती है। उसके पति का नाम सुरेन्द्र है। समय का पँछी तो आसमाँ की गोद में उडता है। बातोबातों में सात आठ साल गुजर गये। अब वह जवाँन बनी है। कली से लेकर फूल बन गयी है। पति सुरेन्द्र तो उसे अपने दिल की धडकन समझते हैं। वे उससे एक पल भी जुदा नहीं होना चाहते। घर में नन्हा मुन्हा मासूम बच्चा है। उसका नाम अन्नु है जो बड़ा नटखट एवं शरारती है। वह उसकी देवरानी सावित्री का बेटा है। लेकिन वात्सल्य की मूर्ति उसे अपने जिगर का बेटा मानती है। वह हमेशा साया बनके उसके साथ रहता है। देवरानी सावित्री और देवर उपेन्द्र तो यह बात मानते हैं कि अन्नु उमा का ही बेटा है। उमा वात्सल्य की

मूर्ति है। उसके दिल में अन्नु के प्रति बार बार ममता पनपाती है। उमा अन्नु को दिलोजान से चाहती है। वह उसे बड़े प्यार से राजा बेटा कहती है। जब मासूम नादान उसे तंग करता है, चावियों का गुच्छा लेकर भागता है। उमा अनोखी अदासे उसे बड़े प्यारसे पुकारती हुयी कहती है – " अन्नु, अन्नु कहाँ छिप गया शैतान ! देख मेरी चावियाँ दे दे। एक भी खो गयी तो आफत आ जायेगी। अन्नु बड़ा अच्छा है। बड़ा भला भी है। राजा बेटा निकल आ "[19] लेकिन नटखट अन्नु छिपकर बैठता है वह उसे तंग करता है। लेकिन उमा को कभी गुस्सा नहीं आता। वह उसे नकली डाँटती है, वह भी प्यारसे। सावित्री तो उसे मतलब उमा को अपनी बेटी मानती है। उमा अन्नु से पल भी जुदा होना नहीं चाहती। मानो अन्नु उसका लगते जिगर बेटा है। सावित्री शिकायत करती है, " (मुडकर), तुम तो छोटी बहू, जब देखो उसके पचडे में फँसी रहती हो। ना छोटी बहू, मैं कह देती हूँ, इस तरह काम नहीं होगा। कल से मेहमान आने शुरू हो जायेंगे। घर भर जायेगा। तब तू इसे लेकर बैठेगी या उनकी देखभाल करेगी ?

उमा – उसकी तुम चिन्ता मत करो जीजी, तुम हो तो सब हो जायेगा। पर इसके सवालोंका जबाब कोई नहीं दे सकता। कहता है, " रात को चमकने वाले तारे किसने बनाये है ? " मैंने कहा, " सबको भगवान बनाता है। " तो बोला, " मुझको, तुमको , बाबा को, चाचा को, अम्मा को, पिताजी को, क्या सबको भगवान ने बनाया है ? " मैंने कहा, " हाँ भाई, भगवान नहीं तो और कौन बना सकता है ? " तब इसने पूछा (अन्नू से) कह दूँ मुन्ने ?[20]

इसतरह नटखट अन्नु के प्रति उमा के दिल में बार बार वात्सल्य एवं ममता पनपती है। वह बड़े प्यार से उसके प्रति अनोखी अदा से शिकायत करती है। उपेन्द्र और सावित्री उमा को तो अन्नु की माँ ही समझते हैं। क्योंकि अन्नु तो चोबीस घण्टें उमा के साथ ही रहता है। उमा भी उसके एक पल भी जुदा नहीं होना चाहती। उसका दिलोजान से लाड प्यार करती है। कालीनाथ जब उमा को देवीमाता का रूप समझकर उसकी पूजा करते हैं, जाल में फँसे हुये परिन्दे के समान उमा की दशा होती है। उमा तो उस समय अन्नु से मिलने के लिए जल बिन मछली के समान मचलती एवं तडफती है। उसपर दबाव है वह उससे मिल नहीं पाती। अन्नु भी उससे मिलने का प्रयास करता है। वह दिवार फाँदकर आनेकी कोशिश करता है तो यह मासूम बच्चा गीर जायेगा इसी डरसे वह भयभीत होती है और अन्नु से दिलका हाल पेश करती है, " (विकल स्वर) मैं देवी नहीं हूँ। मैं तो तेरी चाची हूँ। तू उपर से उतरकर इधर आ। जल्दी आ, मैं तो तेरे लिए तडफ रही हूँ। "[21]

दमन :

अन्धविश्वासी कालीनाथ ने दबाव से भोलीभाली उमा को कालीमाता बनने के लिए मजबूर किया।

घर में उनकी तूती बोलती है। परिवार के हर एक व्यक्तिपर उनका गहरा दबाव है। इसका असर यह हुआ के उसके दिलपर गहरा सदमा पहुँचता है। वह दमीत नारी बन जाती है। वह चिल्ला चिल्लाकर सबको असलीयत बताना चाहती है कि वह देवी नहीं तो उमा है। लेकिन अन्धविश्वासी जमींदार टस से मस नहीं होते। वह पागल सी बनती है। पूजा मंच पर उसे जबरदस्ती से बिठाया जाता है। गाँव के लोग आते हैं। उसकी आरती उतारते है। चंडी पाठ भी होता है। बेचारी सिर्फ टुकर टुकर यह माजरा देखती है। भँवर में फँसी हुयी लकडी के समान इस भोलीभाली उमा की अवस्था होती है। ससुरजी से टकराने का साहस तो उसके पास नहीं हो उसे अपनी किस्मतपर रोना आता है। उसके सुनहरे संसार के सारे सपने चकनाचूर होते हैं। उसके अरमानों का खून होता है। उसके जजबात मचलते हैं। वह उसकी आशा अभिलाषाओं का दमन हो जाता है वह दमित नारी बन जाती है। बेचार मासूम अन्नु उससे मिलाने के लिए तडफता है। लेकिन बेचार अन्नु को तो अपनी प्यारी चाची उमा से मिलने के लिए बेताब है। वह दिवार पर चढ़कर दूर दूर से अपनी चाची को देखता है। क्योंकि लेकिन चाची के पास जाने की उसे इजाजत नहीं उसके नाना उसे पीटते हैं। चाची से मिलने के लिए उसे मना किया है। लेकिन मार पडेगी इस डर से वह उमा के पास नहीं जाता। यह सब सुनकर उमा के दिलपर गहरी चोट लग जाती है। जिगर में एक नासूर पैदा होता है। वह सावित्री और उसका यह कथन देखिए –

" सावित्री : हाय राम ! उधर दीवार के ऊपर, पागल हो रहा है तेरे लिए, पर उसके पिताजी आने ही नहीं दे रहे थे। उसने बहुत जिद की तो चौटा मार दिया। ससुरजी तो किसी की सुनते ही नहीं। अन्नु बार-बार उनसे कहता है, मैं चाची के पास जाऊँगा, चाची देवी कैसे हो गयी ? उसकी पूजा क्यों करते हैं ? वह रोती क्यों रहती है ?

उमा : यही तो वह मुझसे पूछ रहा था। यह सब क्या है जीजी ? क्या अब मुझे किसी को प्यार करने का अधिकार नहीं रहा ? मुझे अब कोई प्यार नहीं कर सकेगा ? नहीं कर सकेगा ? "[21]

" सावित्री : (प्यार से) तुम एकाएक चुप क्यों हो गयी ? इधर क्या देख रही हो ?

उमा : (गंभीर स्वर) देख रही है जीजी, नदी की इन लहरों को इस धूमिल चाँदनी में उनको इस तरह आगे बढ़ते देखकर मुझे बड़ा डर लगता है जैसे .... जैसे भयानक नागिन चुपचाप किसी को डसने जा रही हो। "[22]

सावित्री से वह आगे कहती है " पर जीजी ! आज मुझे लगता है जैसे एक दिन मैं इन लहरों में समा जाऊँगी। मेरे कारण मेरा अन्नु पीटता है। वे मुझसे हमेशा, हमेशा के लिए बिछुड गए है। जीजी मैं

तुम्हारे पैरों पडती हूँ, मुझे बचा लो, मुझे यहाँ से निकालने का कोई न कोई प्रबन्ध करो।

वह सावित्री से रो रोकर कहती हैं उसने आज तक सब बर्दाश्त किया अब इसके बाद देवीमाता बनके रहना उसके बस की बात नहीं वह दो तीन दिन में शायद मर जायेगी।[23]

सावित्री उसे दिलासा देती है। उसके पति जब उसके पास रात में आते है तो फौरन अपना रोना उसके साम्ने रोती है। वह उसे लेकर चले। उसे यहाँ से मुक्त करें। लेकिन पति भी उसे समझाते रहें। वह बार बार दामन फैलाकर पल्लू पसारकर भीख माँगती है यह कहती है उसे पति इस मुसीबत से छुडाये। लेकिन पति भी मजबूर है। दबावग्रस्त है। इसलिए उसकी सारी आशाएँ दमित हो जाती है। वह बेबस बदनसीब दमित नारी बन जाती है। पति उससे कहता है सब करो, जल्द ही मैं तुम्हें लेकर जाऊँगा। लेकिन उसका दर्द बेदर्द जमाना क्या जाने। हालात ने जो जहर पिलाया वह निसंकोल मीरा बन के पीती है। वह मुर्दादिक बन जाती है। वह मौत नहीं आती इसलिए जीती है। दमित नारी हालात उसे बनाती है।

अंधविश्वास :

भोली भाली सुन्दर उमा को कालीमाता देवी ने जो सपने में आदेश दिया था उसे सर आँखोपर मानकर उसे दबाव से देवी बनाते हैं। वह चिल्लाचिल्लाकर इन्कार करती है। लेकिन ससुरजी जो एक नम्बर के अंधविश्वासी है वे टस से मस नहीं होते। जमींदार उसे जबरदस्ती से पूजा स्थल पर बिठाते हैं। वे उसकी पूजा करते हैं। चंडीपाठ होता है। गाँव के लोग आते हैं। वे भी उसे देवी माता मानते हैं। बेचारी उमा के दिलपर गहरी चोट लगती है वे मानो पागल बनती है। अन्नु उससे मिलना चाहता है। लेकिन उस्पर रोक लगायी है। उमा तो मानो मर जायेगी। पति भी दबावग्रस्त है। वे भी उसे मुक्त नहीं कर पाते। वे उससे वादा करते हैं कि आठ दिन के बाद वे उसे यहाँ से ले जायेंगे। उसे 24 घण्टें पूजा स्थल पर बैठना पडता है। उसकी पूजा होती है। कीर्तन होता है। लोग भी उसे सचमुच कालीमाता मानने लगे हैं। इस माहौल का ऐसा असर होता है कि वह भी मानो मानसिक रोगी बनती है। उस हालात से वह भी इतनी घुलमिल जाती है कि वह भी खुद को देवी मानने लगती है। वह भी अंधविश्वास का शिकार हो जाती है। राखाल की नाती बिमार है। तो जमींदार कालीनाथ उसे आदेश देते हैं कि बच्चे को देवीमाता के चरणों में डाल दो। अधेड उमर की विश्वेश्वरी की बेटी भी तीन दिन से छटपटा रही है। तो जमींदार कालीनाथ कहते हैं कि देवी माता का चरणामृत लेकर जाओ बच्ची को पिलाओ सब ठीक हो जाएगा। जब राखाल नाती को लेकर आता है देवी माता मतलब उमा के चरणों में डालता है। पुरोहित उसे देवीमाता का चरणामृत पिलाताहै। उमा सदके दिलसे कालीमाता से दुँवा माँगती है। आँखों में आसू लोकर वह बच्चे के लिए कालीमाता से दुवा माँगती है। बच्चा ठीक होता है। सारे लोग देवी की जयजयकार करते हैं। विश्वेश्वरी की बेटी भी देवीमाँ का

चरणामृत पीकर आसानी से बच्चे को जन्म देती है। इन घटनाओं से गाँव के सब लोगों को पूरा यकीन होता है उमा ही कालीमाता का सच्चा रूप है। उमा को भी ऐसा लगता है कि वह सचमुच देवीमाता है। सच्ची बात तो यह थी वह अन्धविश्वास का शिकार हो गयी है। वह मनासिक रोगी बनी है। हालात ने उसे बिल्कुल अन्धविश्वासी बना दिया। वादे के मुताबिक सुरेन्द्र मतलब उसका पति चोरी चोरी से उसके पास आता है। वह उसे लेकर भागना चाहता है। लेकिन वह टस से मस नहीं होती वह कहती है, " यह क्या कर रहे हों ? मुझे इस तरह मत पूछो। मैं अब तुम्हारी पत्नी नहीं हूँ, देवी हूँ, यह अधिकारपूर्वक तो नहीं कह सकती, पर ... (सहसा सुरेन्द्र बड़े जोर से हँसता है और पत्नी को अंक में भरने के लिए आगे बढ़ता है। उमा पीछे हट जाती है।) नहीं, नहीं, ऐसा मत करो, मुझे मत छुओ।"[24]

पति सुरेन्द्र उसे बार बार समझाने का प्रयास करता है कि तुम उमा ही देवी नहीं। लेकिन उमा पर कोई असर नहीं होता। वह तो सचमुच खुद को कालीमाता मानने लगी है। सच्ची बात तो यह है वह मानसिक रोगी या अन्धविश्वास का खुद शिकार बणी है।

आत्मग्लानि :

उमा सचमुच खुदको देवीमाता समझने लगी। गाँव के सारे लोग भी उसे कालीमाता का सच्चा रूप समझने लगे। छोटा अन्नु सरका बिमार है। उसे बुखार है। तीन दिन से वह तडप रहा है। सावित्री उसका ईलाज वैद्यजी से करना चाहती है। सावित्री उमा से ईलाज नहीं करेगी। वह वैद्यजी को बुलाती है। सुरेन्द्र वैद्यजी को लेकर आता है। लेकिन जमींदा कालीनाथ अन्नु का ईलाज वैद्यजी से नहीं करना चाहते। वैद्यजी को वह घर से निकाल देते हैं। सावित्री दामन फैलाकर कहती है " मैं आपके पैरों पडती हूँ, एक बार अन्नु को वैद्यजी को दिखा दो। उसकी दवा-दारू होने दो। नहीं तो वह नहीं बचेगा। "[25] लेकिन जमींदार चिकना घडा बना रहते हैं। सुरेन्द्र वैद्य जी को लेकर आता है सावित्री हाथ जोडकर कहती है वैद्य जी को अन्नु का ईलाज करने दो। लेकिन जमींदार इजाजत नहीं देते। उमा भी कहती है " (आँखे खोलकर) नहीं उसे दवा दने की जरूरत नहीं है। उसे मैं ही अच्छा करूँगी। "[26] उमा अन्नु को अपनी गोद में लेती है। एकांत में बच्चे को गोद में लेकर देवी कालीमाता से वह सद् के दिल से दुवाँ मागती है कि वह अन्नु को ज्वरमुक्त बनाये। वह ठीक हो। लेकिन अन्नु चल बसा। सावित्री के दिलपर गहरी चोट लगी। वह उमा से चिल्लाकर कहती है " (पागल सी) .... (चीखती है) मेरा बच्चा चला गया। पिशाचिनी, आखिर मेरे बच्चे को खा ही लिया। मैं जानती थी, तू देवी नहीं है, डायन है। राक्षसी, तू इसीलिए उससे प्रेम करने का ढोंग रच रही थी। "[27]

वह बेहोश होकर गिर पडती है। अन्नु की लाश उमा की गोद में ही है, वह यमराज से दुवाँ

माँगती है कि अन्नु का जीवन वापस लौटा दो। उसकी लाज रखे। सुरेन्द्र वैद्यजी को लेकर आता है। सावित्री और उपेन्द्र भी उसे डायन, भला बुरा कहते हैं। उसे वह बदनाम करते हैं। वे उसे गालियाँ देते है। उमा भी होश में आती है। उसे पूरा यकीन होता है कि उसने अन्नु की हत्या की है। उसे आत्मग्लानि होती है। उसे यह भी अहसास होता है कि वह कालीमाता नहीं तो उमा है। वह गंगा नदी में डूब जाती है। खुदकुशी करती है। सुरेन्द्र उसकी लाश लेकर पानी के बाहर आता है। इसतरह अन्नु की हत्यारन मानकर उसने आत्मग्लानि की वजह से गंगा में डूबके आत्महत्या की।

खण्डित व्यक्तित्व :

डॉ. विष्णु प्रभाकरने " बन्दिनी " नाटक में जो उमा है उसे मनोविज्ञान के धरातलपर बड़ी कुशलता से प्रस्तुत किया है। उमा जो भोलीभाली थी। सुन्दरता में वह लाखों में एक थी। बचपन में उसकी शादी हुयी थी। आठ नौ साल की वह जब थी तब वह बालिका वधु बनके ससुराल आयी थी। जमींदार कालीनाथ की वह बहू बन गयी थी। जमींदार कालीनाथ एक नम्बर के अन्धविश्वासी थे। आज उमा जवान बन गयी है। पति सुरेन्द्र उसे दिलोजान से चाहते हैं। लेकिन अचानक किस्मत ने अंगडाई ली। वक्त ने करवट बदली। जमींदार कालीनाथ उसे देवीमाता मानने लगे। क्योंकि उन्हें कालीमाता ने सपने में आदेश दिया था। उमा बारबार कालीनाथ को समझाने का प्रयास करती रही कि वह उनकी बहू उमा है। कालीमाता का रूप नहीं है। लेकिन अन्धविश्वासी कालीनाथ टस से मस नहीं हुए। वे उसे पूजास्थल पर बिठाकर उसकी पूजा करते हैं। चण्डीपाठ करते हैं। सारे गाँव के लोग भी उमा को सचमुच देवी माता का रूप समझने लगते हैं। उमा को पूजास्थल पर दबाव से देवी माता बनकर बैठना पडता है। जाल में फँसे हुए परिन्दे के समान उसकी अवस्था होती है। ससुरजी के इस सलूक से उमा का व्यक्तित्व खण्डित होता है। उसके सारे अरमानों का खून होता है। उसके जजवान मचल जाते हैं। कुछ दिन गुजरने के बाद वह खुद अन्धविश्वास का शिकार बन जाती है। लेकिन जब नन्हा मुन्हा मासूम बच्चा अन्नु मर जाता है। तो उसे सच्चाई का अहसास होता है। उसे आत्मग्लानि होती है। और वद खुदकुशी करती है। नदी में कूदकर अपनी जान देती है।

4) शान्ता (अब और नहीं)

विष्णु प्रभाकरजी के " अब और नहीं " इस नाटक की प्रमुख नारी पात्र शान्ता है। आज उसकी उमर 52-53 सालकी है। 34 साल पहले उसकी शादी हुयी थी। उसके पति का नाम वीरेन्द्र प्रताप है। शान्ता सुन्दर, हँसमुख नारी थी। वह एक कलाकार थी। अच्छा सितार बजाती, अच्छा खाना पकाती और कुशलता से सुन्दर पेंटिग्ज करती। शान्ता के चरित्र चित्रण में नाटककार ने मनोविज्ञान के धरातल पर उसके मायूसी, मानसिक रोगिणी, मुक्ति की तालश, खण्डित व्यक्तित्व आदि मनोविकारों को जो चित्रीत किया है।

वो नारी मनोविज्ञान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

मायूसी :

वह सुन्दर एवं हँसमुख थी। लाखों में एक थी। माता पिता ने उसकी शादी वीरेन्द्र प्रताप नामक युवक से की। पति उसे दिलोजान से चाहते हैं। वह तो नयी उमंग से ससुराल जब आयी तो उसके अरमानों की झोली भरी। एक दिन का यह जिक्र होता है कि वह नववधू के वेश में अनोखी अदा से सितार बजाती है। सितार से जुदा होना उसकी बस की बात नहीं। सितार पर उसकी उँगलियाँ ऐसी सिरकती है कि मानो हवा तेज बहती है। इक मस्तीका आलम छा जाता है। उसे अपने तनबदन का होश हवास नहीं रहता। लेकिन इतने में उसकी साँस पद्मावती आती है और उससे कहती है, " तो तुम यहाँ बैठी हो सितार लिये। कितनी बार कहा कि बहू ! अब तुम्हें सितार बजाने की क्या जरूरत है ? जिसके लिए जरूरत थी वह काम हो गया। तुम अब इस घर की बहू हो। इस घर की और घरवालों की सार-सँभाल तुम्हारा मुख्य काम है। सितार बजाना नहीं "

शान्ता : अभी आती हूँ माँजी। ऐसे ही जरा मन कर आया था।

पद्मावती: ना बहू ना। मन के वश में हो गयी तो गिरस्ती नहीं चलेगी। कह देती हूँ। आ जल्दी आ ! "[28]

साँस ने ऐसा टोकने से बेचारी उदास एवं मायूस बन जाती है।

मानसिक रोगिणी :

सेवाभावी, पतिपरायणा शान्ता की शादी होकर 34 साल हुए। उसे मानो कठपुतली समझकर वीरेन्द्र प्रताप उसे अपने ईशारे पर नचाते रहे। वह उनकी हाँ में हाँ मिलाती रही। आज तक सब कुछ बर्दाश्त करती है। इसके बाद दबाव बर्दाश्त करना उसके बस की बात नहीं वह मानसिक रोगी बन जाती है। परिवार में जो लोग है वे हरइक दबावग्रस्त है। मानो वीरेन्द्र प्रताप अधिनायक ही है। जाल में फँसे हुए परीन्दे के समान शान्ता की अवस्था होती है। वह मानसिक रोगी बणती है। अभी वह उदास रहती है। किसी ने अगर पूछा तो वह गुमसूम रहती है। न खुलकर हँसती है और न बातें करती है। जैसे गमगीन है। घर के कामों में उसकी रूचि दिन-ब-दिन कम होती जा रही है। रात में देर तक कुछ न कुछ करती रहती है। पेंटिंग्ज करती है या अपनी मर्जी कोई कहानी आधी अधूरी लिखती है। नये मकान का नक्शा जब वीरेन्द्र प्रताप उसे दिखाते हैं तो खुल्लमखुल्ला कहती है कि न मुझे नक्शा पसन्द है और न नये मकान का नाम पसन्द है। वह अपनी बहू के पास आलमारी और कोठियों की चावियों का गुच्छ देकर कहती है, कि अब घर तो बहू संभाले क्योंकि शान्ता मुक्ति चाहती है। मंजरी को पूरा यकीन है कि माँ मानसिक रोगी है वह अपने

पति शशांक से कहती है, " डॉक्टर तन का ईलाज कर सकता है, मन का नहीं। माँ का मन रोगी है। पापा जायेंगे अपने डॉक्टर दास के पास। बुखार ताप तिल्ली के आगे उसकी गति नहीं है। "[29] मनरोग तज्ञ डॉ. मलिक को बहू मंजिरी अपनी साँस मतलब शान्ता के रोग के बारे में बताती है, " न, न, मुझे कहने दो। छिपाने से रोग और बढ़ेगा। माँ के रोग की बहुत गहरी है। परिवार के कठोर अनुशासन और पापा की अधिन्यायवादी मनोवृत्ति से बहुत पहले माँ के स्वतंत्र मन की हत्या कर दी थी। अवसर पाकर वह मरा मन जी उठा और माँ बीमार हो गयी। "[30]

डॉक्टर शान्ता से मिलते हैं। शान्ता डॉक्टर से अपना दर्द एवं हाल पेश करती है, " (हँसकर) पति यानि अधिनायक, तभी तो वे मुझे दासी बना चुके थे। मैं भूल गयी थी कि मेरी भी कोई स्वतंत्र सत्ता है। मैं जानती ही नहीं थी कि मैं क्या चाहती हूँ। मुझे अब पता लगा है कि मैं कौन हूँ, और क्या चाहती हूँ। इसलिए वे अब बाधा देते हैं, पागल कहते हैं। "[31]

वह उनको बताती है कि कोल्हू के बैल के समान उसने 34 साल चक्कर काटे। अब वह इस कैदखाने से मुक्त होना चाहती है। उसकी चारों ओर बन्द हवा है। वह मुक्त हवा चाहती है। डॉक्टर को इन बातों से पूरा विश्वास होता है कि शान्ता मानसिक रोगी है। उनका यह कथन देखिए – " अभी कुछ कह नहीं सकता। सिम्पटम्स तो खण्डित मनस्कता के लगते हैं। तकनीकी भाषा में ऐसे बीमार स्कीनोफ्रनिक कहलाते हैं। ठीक-ठीक पागल होना तो नहीं है। पर आधे पागल की-सी हालत तो है ही। "[32]

इसतरह डॉक्टर का कहना है शान्ता के दिल और दिमाग पर गहरी चोट लगी है। इससे इतना सदमा पहुँचा है कि उसकी चेतना ही घायल हो गयी है।

इसतरह शान्ता मानसिक रोगी बणी गयी है।

मुक्ति की तलाश :

शान्ता मानसिक रोगी बनती है। वह मुक्ति के लिए छटपटाती है। भँवर में फँसी हुयी लकडी के समान इस नारी की अवस्था हो जाती है। एक दिन समय मिलनेपर वह चोरी चोरी से घर से निकलती है। बाहर आनेके बाद उसे बेहद खुशी होती है। वह मानती है बन्धन मुक्त है। अब वह बन्धन से मुक्त होकर अपनी मर्जी से जीएगी। अब उसपर किसी का जोर नहीं चलेगा। उसे मुक्ति की तलाश थी। इसीलिए सारे बन्धन तोडकर वह घर से निकली। घर के लोग मानों उसे पागल समझते थे। लेकिन उसे बन्धनमुक्त होनेपर सच्चा आनंद मिला वह अब तमसा नदी का जल लाने के लिए निकल पडती है। वह संगीत विद्यालय के विद्यार्थी विद्यार्थिनीयों को यह पैगाम देती है " (हँसती हुई) जानती हूँ वहा जाना संकट में पडना है पर जबतक हम संकट में न पड़े, और उसे सहना न सीखे तब तक जीने का मजा क्या ! खतरा तभी तक खतरा

है जब तक पराया है। आजमा कर देखो, दूरी मिटते ही वह प्यार हो जाता है। इसलिए मैं अकेली जा रही हूँ। अकेले ही जाना चाहिए सबको। तुमको भी। किसी के साथ जाने का मतलब है उसकी इच्छा के अनुसार चलना। उसमें अपना क्या रह जाता है ? बन्धन हो जाता है वह। बन्धन तो मृत्यु है, जीवन नहीं। लेकिन हम है कि मृत्यु को ही जीवन मानकर जीते हैं। मैं बन्धन-मुक्त होकर जीना चाहती हूँ। इसीलिए ...

खण्डित व्यक्तित्व :

शादी से पहले बहू बेटी शादी के बाद बहू रानी बनती है। शान्ता दुल्हन बनके ससुराल आती है। उसे संगीत का बेहद शौक है। वह प्राण से प्रिय सितार लाना नहीं भूलती। एक दिन वह सितार बजाती है तो सास उसे टोकती है। सास का सलूक देखकर बेचारी मायूस एवं उदास बनती है। पति आकर मीठे बोल बोलते है। उसके रूप की खुशामद करते हैं। बेचारी गुस्सा भूलकर पति की बातें सर आँखोंपर मानती है। वह भारतीय नारी है। पति को परमात्मा मानती है। बाद में सास की मृत्यु हो जाती है। घर के स्वामी वीरेन्द्र प्रताप है। घर में उनकी तूती बोलती है। बादमें वह चार बच्चों की माँ बन जाती है। लेकिन सारे घरपर पति का दबाव है। पति के साँचे में ही वह ढलने लगी। पति उसे कठपुतली समझकर अपनी ऊँगलियों पर नचाते रहे। एक नम्बर की यह कलाकारा अपनी कला से दूर रही। ठाकूर वीरेन्द्र प्रताप ने शान्ता की बात कभी नहीं मानी। सदा अपनी मनमानी करते रहें। इससे शान्ता के स्वतंत्र मन की हत्या हो गयी। उसका व्यक्तित्व खण्डित हो गया। उसके सारे अरमानों का खून हो गया। उसे ऐसा अहसास होता है कि वह अपने ही घर में मेहमान बन गयी। पति ने भूलकर भी कभी उसके दिल में झाँककर देखा नहीं। ऐसा सलूक करने से बेचारी शान्तापर क्या गुजरेगी इसका अभ्यास नहीं किया। इससे बेचारी का व्यक्तित्व खण्डित हो गया। बड़ा बेटा भी पिताजी के दबाव से कनाडा चला गया। अब वह परिवार सहित कनाडा में रहता है। वह अब बीमार रहती है। वीरेन्द्र प्रताप न जो भी काम किया अपनी मर्जी से किया। कभी भी शान्ता की राय नहीं ली।

5) करूणा (टूटते परिवेश) :

विष्णु प्रभाकर जी के " टूटते परिवेश " इस सामाजिक नाटक की करूणा प्रमुख नारी पात्र है। वह गृहस्वामिनी है। वह मध्यमवर्गीय परिवार में रहती है। उसके मनोविकार, कुण्ठा, आत्मग्लानि को नाटककार विष्णु प्रभाकर जी ने मनोविज्ञान के धरातल पर बड़े सुन्दर ढंग से अनोखी अदा से चित्रीत किया है। जो नारी मनोविज्ञान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

कुण्ठा :

करूणा कुण्ठाग्रस्त नारी है। वह मध्यमवर्गीय परिवार में रहती है। पति पत्नी चाहते हैं कि सब

बच्चे हँसी खुशी से इस घर में इतमीनान से रहे। लेकिन जमाने के साथ बालबच्चों की नीयत बदली वे भी बदले। उसका बेटा माता-पिता से जुदा होकर अपनी पत्नी के साथ इस शहर में रहता है। दूसरा बेटा कनाडा में जाकर बसा है। छोटा सुशिमित बेरोजगार है। दर दर की ठोकरे खाने के बावजूद भी इस लाला शाही के जमाने में उसे नौकरी नहीं मिलती। वह अर्जियाँ भेजता है लेकिन उसे नौकरी नहीं मिलती। वह भी परिवार से मुक्त होकर अपनी प्रेयसी के साथ विदेश यात्रा पर जाता है। उससे पहले दूसरी बेटी मनीषा जो कॉलेज में प्रोफेसर है वह किस्टोफर नामक युवक से घर से भागकर चोरी चोरी से शादी करती है। किस्टोफर भी उसी कॉलेज में प्रोफेसर है। जाँति पाँति के बंधन को ठोकर मार के मनीषा किस्टोफर से शादी करती है। यह सब देखकर करूणा के दिलपर गहरी चोट लगती है। दिवाली के त्योहार में लक्ष्मी पूजा के अवसरपर दोनों पति पत्नी अपने बच्चों का बेसब्री से इन्तजार करते हैं। लेकिन कोई नहीं आता। साथ ही साथ छोटी बेटी भी घर की घुटन से नफरत करके घर से जुदा होकर छात्रावास में जाकर रहती है। दीप्ति भारतीय होकर भी सिगरेट पीती है। वह आधुनिक युवती है। उसका इस घर में दम घूटता है इसलिए छात्रावास में जाकर रहती है। वह जिन्दगी अपनी मर्जी से जीना चाहती है। परसों वह बालिग हो जाएगी। फिर वह बन्धन से मुक्त हो जाएगी। ये सब बच्चों का सलूक देखकर करूणा कुण्ठाग्रस्त बनती है। करूणा और उसके पति ने कडी मेहनत करके बडी हिफाजत से अपने बच्चों की परवरीश की लेकिन अचानक किस्मत ने अंगडाई ली। वक्त ने करवट बदली। घर से नफरत करके सारे बच्चे माता पिता को अकेले छोडकर घर से जुदा होते हैं। माता पितापर क्या गुजरेगी इसका विचार किसी ने भी नहीं किया। बच्चे तो बूढ़ापे के सहारे होते हैं। लेकिन इस मशीनी युग में उन्हें अपने माता पिता की कदर नहीं। परेशान होकर जब उसके पति विश्वजीत खुदकुशी करने के लिए घर से निकल जाते हैं तो बेचारी करूणा घबराती है। सबको अपने पास बुलाती है। लेकिन वे टस से मस नहीं होते। पिताजी की तलाश करने के लिए कोई नहीं जाता। हर इक को अपनी अपनी पडी है। उनके पास समय नहीं। अपनी औलाद का यह पत्थरादिल सलूक देखकर वह कहती है, " (बीच में टोककर) मैं कहती हूँ, तुम सब को अपनी-अपनी पडी है। दीप्ति भी चार दिन से घर छोडकर छात्रावास में जाकर रहने लगी है। लेकिन कभी किसी ने यह सोचा कि माँ अब बूढ़ी हो गई है, खाना पकाते समय उसके हाथ काँपते हैं। "[33]

अभी वह बूढ़ी हो गई है। उसके खाना पकाते समय हाँथ काँपते है। लेकिन औलाद के दिल में थोडा सा भी प्यार नहीं। सारा परिवार शीशे के समान बिखर गया। उनके दिल में माता पिता के प्रति प्यार एवं ममता नहीं, यह देखकर वह कुण्ठीत हो जाती है।

इससे पहले विवेक जब अपनी मेहबूबा जरीना के साथ विदेश यात्रा पर जाने निकलता है बार बार

समझाने पर वह चिकना पड़ा बनकर रहता है। तो बेचारी करूणा टूटे हुए दिल से कहती है, " (पूर्वतः) सीधन, घूटन, बुदबू मुक्ति यहीं कहते-कहते सब चले गये। तू भी जा। तू भी मुक्ति पा। लेकिन ... लेकिन मरे भाग्य में मुक्ति नहीं लिखी है। मैं इस घर को छोड़कर कहीं नहीं जा सकती "[34]

आत्मग्लानि :

करूणा एक आदर्श भारतीय नारी है। वह संस्कार शील एवं ममतामयी नारी है। मध्यमवर्गीय परिवार की वह गृहस्वामिनी है। उसके पति का नाम विश्वजीत है। पति पत्नि आज बूढ़े हो गये। उसके तीन बेटे और तीन बेटियाँ है। दोनों ने कडी मेहनत करके बड़ी हिफाजत से अपने बच्चों की परवरीश की। पति पत्नी चाहते हैं कि सब हँसी खुशी से एक साथ रहे। लेकिन शीशे के समान सारा परिवार बिखर गया है। बड़ा बेटा अपनी पत्नी के साथ अलग रहता है। दूसरा बेटा परिवार से जुदा होकर कनाडा में जा बसा है। बडी बेटी भी शादी शुदा है। दूसरी बेटी माता पिता के दिल तोडकर जाँति पाँति की बंधन को ठोकर मारकर किस्टोफर नामक युवक से चोरी चोरी से शादी करती है। किस्टोफर उसी कॉलेज में प्रोफेसर है जहाँ मनीषा प्रोफेसर है। दिवाली के त्योहार में लक्ष्मी पूजा के अवसर पर पति पत्नी चाहते हैं कि सब बच्चे मेहमान भाईबंध हाजिर हो ताकि घर में रौनक एवं बहार आये। यह रस्म रिवाज का सिलसिला बरसों से शुरू है। बुलावा भेजने पर भी कोई नहीं आता। यह सब देखकर पति पत्नी के दिलपर गहरी चोट लगती है। विवेक और दीप्ति भी अपने माता पिता का मजाक उडाती है तब करूणा दीप्ति को टोकती है " " (अधिकार से) पूजा की जरूरत है। वह हमेशा से होती आयी है, हमेशा होती रहेगी। वर्ष में एक बार लक्ष्मीजी सब के घर आती है। "[35] (रसोई घर में जाती है।)

सारा परिवार बिखर गया है। विवेक जो छोटा बेटा है सुशिक्षित बेरोजगार है। कई बार अर्जियाँ भेजनेपर भी उस बदनसीब को नौकरी नहीं मिली। वह भी घर से परेशान होकर अपनी मेहबूबा जरीना के साथ विश्वयात्रापर निकल गया। अब रही सिर्फ घर में छोटी बच्ची दीप्ति। वह भी घर से नफरत करती है। सकिन भरे घर में उसका दम घुट जाता है। वह भी घर से जुदा होकर बड़ी खुशी से छात्रावास में जाकर रहती है। सारे परिवार का विघटन हो गया। इसका कारण ढूँढने का करूणा प्रयास करती है। वह पति को दोषी ठहराती है। और खुद को भी दोषी मानती है। उसे आत्मग्लानि होती है। उसे एहसास होता है कि पति और उसकी वजह से सारे परिवार का विघटन हो गया है। टूटे हुए दिल से वह अपने पति से कहती है, " ठीक तो कहती है। तुमने उनके लिए आखिर किया क्या ? बैठे बैठे उनके स्वास्थ्य और सुख की चिन्ता करना ही तो सब कुछ नहीं है। उनके भविष्य की चिन्ता की कभी तुमने ? बने उनके मित्र कभी ? अब जब वे अपना-अपना रास्ता आप बना रहे हैं तो तुम्हारा मन उनके लिए दुःखी

होता है। क्या यह स्वार्थ नहीं है ? मैं पूछती हूँ अपने स्वार्थ को प्यार करने के अलावा तुमने कभी कुछ किया है क्या ? (अल्प विराम), (एकदम शान्त होकर), और तुम्हें ही क्यों दोष दूँ ? मैंने भी क्या किया है ? हम सभी स्वार्थी है। "[36]

इसतरह आत्मग्लानि का स्वर उभर आता है। पति के साथ वह भी खुद को जिम्मेदार मानती है।

6) आनन्दी (गान्धार की भिक्षुणी) :

आत्मग्लानि :

" गान्धार की भिक्षणी " नाटक की नायिका आनन्दी बेहद सुन्दर नारी है। वह देशप्रेमी नारी है। कलिंग देश के राजा परिप्राजक नपुंसक एवं कायर है। सारे देश में हूण सरदार की तूती बोलती है। हूण सरदार किसी दरिन्दे से कम नहीं। हूण सरदार एवं उसके सैनिकों ने मालव वासियोंपर मनमाने अत्याचार किये। स्वर्ग से सुन्दर मालव देश को समशान बनाया। दिन दहाडे औरतों की इज्जते लूटी। उन्होंने सितमगर बनके सितम ढाये। सारी प्रजा भयभीत हो गयी है। प्रजा के प्रति राजा के दिल में कोई ममता नहीं पनपती। अपनी जान एवं आबरू बचाने के लिए नारियाँ चोरी चोरी से खण्डहर में छुपती है। मानों इनके सिरपर मौत सँवार है। गान्धार की भिक्षुणी का रंग रूप देखने के बाद हूण सरदार शैतान बन जाता है। वह आनन्दी की इज्जत लूटता है। वह प्रतिकार करती है लेकिन आखिर हूण सरदार उसे अपनी बर्बर वासना का शिकार बनता है। उसने अपनी हवस पूरी की। आनन्दी शीलभ्रष्ट हो जाती है। उसके दिलपर गहरी चोट लग जाती है। वह अपना काला मुँह लेकर जीना नहीं चाहती। खुदकुशी करने के सिवाय उसके सामने कोई रस्ता नहीं था। वह मौत को गले से लगाना चाहती है। वह खुदकुशी करनेवाली थी। लेकिन संजोग से दशपूर के राजा यशोधर्मन वहाँ आते हैं। उसे आत्महत्या करने से रोकते हैं। उसके पेट में हूण सरदार का पाप पल रहा था। उसे आत्मग्लानि होती है। पेट में पलनेवाले बच्चे को वह पाप की निशानी समझती है। उसे आत्मग्लानि होती है।

प्रतिशोध :

सुन्दर हँसीन जवाँन आनन्दी की हूण सरदार ने इज्जत लूटी। उसके पेट में हूण सरदार का बच्चा पल रहा है। इसे वह पाप की निशानी मानती है। वह मरना चाहती है। लेकिन राजा यशोधर्मन ने उसको बड़ी कुशलता से मन परिवर्तन किया। हूण सरदार का खून ही उसकी जिन्दगी का मकसद बन जाता है। हूण सरदार के प्रति बदले की आग में वह जलती है। जब तक वह उसका खून नहीं करेगी तब तक उसे शांति नहीं मिल सकती। जब हूण सरदार उसके पास बड़ी खुशी से आता है। इधर इससे पहले वह कुँआरी माता बन गयी थी। इस मासूम बच्चे को वह पाप की निशानी मानती रही। फिर भी उसके सीने में इक माँ का दिल था। हूण सरदार आनन्दी और इस मासूम बच्चे को लेकर जाना चाहता है। हूण सरदार के

दिल में यह गलत फहमी हो जाती है कि आनन्दी के दिल में उसके प्रति अब भी प्रेम है। लेकिन आनन्दी चोरी चोरी से उसके पीठ में कटार भौंककर उसका खून करती है। हूण सरदार मर जाता है फिर भी आनन्दी उसके पेट में, चेहरे पर, पैरोंपर, छातीपर बार बार कटारे भौंकती है। वसुमित्र आकर यह बताते हैं, " जी हाँ अकेला था। जब मैं वहाँ पहुँचा तो देवी लगातार उसके बदन में कटार भौंके जा रही थी, चेहरे पर, छाती पर, पेट पर, पैरों पर। मैं यह दृश्य नहीं देख सका। मैंने चिल्लाकर कहा, " देवि यह मर चुका है। " [37] तब कहीं वह पीछे हटी। इसतरह हूण सरदार का खून करके ही वह शान्ति पाती है।

खण्डित व्यक्तित्व :

" गान्धार की भिक्षुणी " नाटक की नायिका आनन्दी है। जो खुबसुरत एवं ज्वाँन नारी है। हूणों ने मालव वासियों पर मनमाने अत्याचार किये। मालव देश के राजा परिव्राजक महाराज नपुंसक एवं कायर है। माल वासी सारे भयभीत होते है। मालव देश की औरते खण्डहर में छुपती है। हूण सरदार और उसके सैनिकोंने हरा भरा प्रदेश सारा जलाकर राख कर दिया। न जाने कितनी औरतों की इज्जते लूटी गयी। हूण सरदार जो दरिन्दा था उसने आनन्दी को अपनी बर्बर वासना का शिकार बनाया। आनन्दी ने प्रतिकार किया लेकिन वह अबला थी। उसकी सारी कोशिशे नाकामयाब हुयी। हुण सरदार ने उसकी इज्जत लूटी। आनन्दी के दिलपर गहरी चोट लग गयी। वह मुर्दादिल बन गयी। उसका व्यक्तित्व खण्डित हो जाता है। वह मुर्दादिल बन जाती है। हूण सरदार ने उसे अपनी बर्बर वासना का शिकार बनाया इसका असर यह होता है कि हूण सरदार का बच्चा उसके पेट में पल रहा था। वह उस बच्चे को अपने पाप की निशानी मानती है। दशपूर के राजा यशोधर्मन उसे खुदकुशी करने से रोकते हैं। टूटे हुए दिल से उस बच्चे को जन्म देती है। जब से दरिन्दे हूण सरदार ने उसकी इजजत लूटी तब से उसका व्यक्तित्व खण्डित हो जाता है।

" गान्धार की भिक्षुणी " की आनन्दी प्रमुख नारी पात्र है। उसके मनोविकार आत्मग्लानि, प्रतिशोध, खण्डित व्यक्तित्व, आदि को डॉ. विष्णु प्रभाकर जी ने मनोविज्ञान के धरातल पर सुन्दर शब्दों में अंकीत किया है।

7) बिन्दु (श्वेत कमल)

" श्वेत कमल " नाटक की प्रमुख नारी पात्र बिन्दु है। वह जवाँन सुन्दर . . . युवती है। उसकी उमर बीस साल की है। विष्णु प्रभाकर जी ने उसके मनोविकार – खण्डित व्यक्तित्व को बड़ी कुशलता से चित्रीत किया है। नारी मनोविज्ञान की दृष्टि से जो महत्वपूर्ण है।

खण्डित व्यक्तित्व :

आज के इस मशीनी युग में जीवन मूल्य बदले जरूर हैं। बदलाव किसी दबाब के कारण आता है। परिवार के पोषण का दायित्व पुत्र पर आता है। लेकिन आज हालात बदले है। जिस परिवार में पिता पुत्र

नहीं है तो पुत्री को यह भार उठाना पडता है। इतना ही नहीं ऐसी स्थिति में वह विवाह तक नहीं कर पाती। बिन्दु परिवार में सब से बड़ी है। पिताजी कुछ साल पहले परलोक सिधारे। इसलिए परिवार की सारी जिम्मेदारी इसपर आती है। भरा पूरा परिवार है। इस मँहगाई के जमाने में सारे परिवार का गुजारा करने के लिए वह कड़ी मेहनत करती है। वह जहाँ भी काम करती है। उस दफ्तर के बॉस एवं मॅनेजर उसपर डोरे डालते हैं। उसे अपने मोहजाल में फँसाना चाहते हैं। लेकिन बिन्दु इक आदर्शवादी नारी है। उसे अपनी इज्जत दिलोजान से प्यारी है। जब उसकी इज्जत खतरे में पड़ जाने की संभावना पैदा हो जाती है तब वह समझदारी से काम लेती है। फौरन नौकरी छोड देती है। गुजरे हुए पलों की जब उसे याद आती है तब वह कहती है, " मैं एक असहाय और असमर्थ नारी, दरिन्दों के संसार में निपट अकेली। उनके नुकीले दाँत और पैने पंजे मेरे शरीर की चिथडे चिथडे कर देना चाहते हैं। यहाँ हर नर भक्षक है हर नारी भक्ष्य। भोजन से पूर्व उसे सुवाच्य बनाने के लिए उसे यातना देती ही होगी, जैसे बिल्ली चूहे को देती है। लेकिन मैं इनके जाल में नहीं फसूँगी। "[38] इस पाप की दुनिया ने उसपर सितमगर बनके सितम ढाए। डॉ. विकास उसे दिलोजान से चाहते हैं। डॉ. विकास कॉलेज में एक प्रोफेसर है। वे उसे एम्.ए में पढाते थे। डॉ.विकास उसे अपने दिल की धडकन समझते थे। वे उससे शादी करना चाहते थे। लेकिन वह विवश एवं असमर्थ नारी है। क्योंकि सारे परिवार का उसपर जिम्मा है। अगर उसने शादी की तो फिर परिवार का गुजारा कैसा होगा ? जिगर में चोट छुपाकर भी वह विकास से कहती है, " (मुस्कुराकर), डरो नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगी। मेरी दो छोटी बहने हैं, एक बूढी माँ है। (सहसा गंभीर होकर) पर मैं उनके साथ अपनी खुशी नहीं बाँट सकती। उनके और मेरे बीच में अजनबीपन का एक ऐसा समुन्दर घुमडता रहता है। "[39] इसतरह डॉ. विकास से शादी करने का सपना सपना रह जाता है। वह परिवार के लिये अपने अरमानों का खून करती है। इसलिए उसका व्यक्तित्व खण्डित हो जाता है। वह दमीत नारी बन जाती है।

गौण, मनोवैज्ञानिक नारी पात्र

विद्रोह और प्रेम

विष्णु प्रभाकरजी के नाटकों में नारी पात्रों की एक विशेषता यह है कि पात्रों में विद्रोह और प्रेम एक साथ दिखायी देते हैं। नारी के मन में किसी न किसी कारणवश विद्रोह की भावना समय समय पर प्रस्फुटित होती है। और साथ ही साथ उसकी प्रेमभावना भी प्रवाहीत होती दिखायी देती है। कभी कभी नारी में प्रसंगद्वारा जिद और साहस की भावना भी दृष्टिगोचर होती है। नारी के इन मनोविकारों को विष्णु प्रभाकरजी ने मार्मिक शब्दों में अंकित किया है।

1) मनीषा (टूटते परिवेश)

" टूटते परिवेश " नाटक में जो मनीषा है वह नाटक की गौण नारी पात्र है। उसकी उमर

25-26 साल की है। वह जवाँन हँसमुख नारी है। वह गृहस्वामी विश्वजीत की दो नम्बर की बेटी है। वह शहर के शानदार कॉलेज की प्रोफेसर है। फॅशन फरस्ती के जमाने में वह सर के लेकर पाँव तक मॅचींग करती है। उसी कॉलेज में किस्टोफर नाम के जो लेक्चरर है उससे वह प्यार करती है। वह उससे शादी करना चाहती है। उसने यह राज की बात माँ को बतायी। माँ ने उसे समझाने की कौशिश की लेकिन सारी कौशिशें नाकामयाब रही। मनीषा टस से मस नहीं हुयी। कुलीन खानदान की रीति परम्परा को मिट्टी में मिलाकर जाँति पाँति के सारे बन्धन तोड़कर वह घर से जुदा होकर चोरी चोरी से किस्टोफर से शादी करती है। वह दुनियादारी की परवाह नहीं करती। ऐसा करने से माता पिता पर क्या गुजरेगी इसका उसे अहसास नहीं होता। घर से रफूचक्कर होने से पहले वह दर्शकों से कहती है – " कोई नहीं है। मैं जा सकती हूँ। आप पूछ सकते हैं, मैं हू कौन ? कहाँ जा रही हूँ ? यही तो घर की समस्या है। यही आप जानना चाहते है। मैं पूछती हूँ कि क्या मैं आपका इतनी नादान दिखाई देती हूँ कि अपना भला बुरा न सोच सकूँ, अपनी इच्छा से कहीं आ जा न सकूँ, जो ठीक समझ वह कर न सकूँ ? यानी अपने भाग्य का निर्णय अपने आप न कर सकूँ ? (वाणी में गर्विला विश्वास उभरता है) जी नहीं, मैं अपना मार्ग चुनने का अधिकार नहीं दे सकती, कभी नहीं दे सकती। मैं जा रही हूँ, वहीं जहाँ मैं चाहती हूँ। आप चाहे तो इसे पाप कह सकते हैं, विद्रोह भी कह सकते हैं। भाषा का दुरूपयोग करने से कौन किसको रोक सका है। लेकिन मैं तो इसे अधिकार कहती हूँ, अपने भाग्य का अपने आप निर्णय करने का अधिकार मैं इस अधिकार के लिए ही यह घर छोडकर जा रही हूँ। "[40] जाने से पहले उसे माँ ने समझाने का प्रयास किया लेकिन अपने फैसले पर वह अड़िग रही। जाकर किस्टोफर से शादी करती है।

2) शारदा (युगे युगे क्रान्ति) :

शारदा प्यारेलाल की लाडली बेटी है। उसके पिता प्यारेलाल ने कुलीन परिवार की रीति परम्परा को मिट्टी में मिलाकर लाला सगुणचंद की विधवा बेटी कलावती से शादी की। शारदा प्यारेलाल और कलावती की लाडली बेटी है। दोनों ने बड़ी हिफाजत से उसकी परवरीश की थी। उस जमाने में जाँति-पाँति के बन्धन खडे थ। लडकी जब घर से निकली तो फिर भी उसके सर पर हमेशा पल्ला रहता। एक दिन का जिक्र ऐसे हुआ कि भरे बाजार की बस्ती से शारदा गुजरती है लेकिन उसके सर पर पल्ला नहीं था। प्यारेलाल ने देखा तो वे गुस्से की तैश में आये। उन्होंने उसके गाल पर थप्पड मारा। तब से लेकर शारदा का मन परिवर्तन हुआ। वह पक्का ईरादा करती है कि पुराने दाकियानूसी रीति रिवाजों को वह अब नहीं मानेगी। देशभक्ति की भावना उसमें कूट कूट से भरी थी। वह महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित होती है। वह स्वातंत्र्य आन्दोलन में हिस्सा लेती है। वह अबला सबला बन जाती है। अपनी ओजभरी वाणी

से भाषण देती है। पिकेटिंग करती है। साहसी बनती है। खबरोंसे खेलती है। उसे पुलिस गिरप-तार करती है। लेकिन अपने प्यारे देश के लिए जेल जाती है। पुलिस खबर सुनते ही प्यारेलाल के तन बदन में आग ही आग लग जाती है। वे शारदा को कुलकलंकिनी मानते हैं। वे उसे अपने घर में अब प्रवेश नहीं देंगे। देशप्रेमी विमल से वह प्यार करती है। विमल के पिताजी भी महात्मा गांधी के परमभक्त थे। वे उसे अपनी बहु बनाना चाहते हैं। शारदा संयुक्त प्रांत की अग्रवाल है और विमल तो पंजाबी खत्री है। फिर भी वह विमल से शादी करना चाहती है। उसके ससुरजी चन्द्रकिशोर दोनों की शादी के एकसूत्र में बाँधकर आजादी की लडाई में भाग लेने के लिए बड़ी खुशी से ईजाजत देते हैं।

3) जैनेट (युगे-युगे क्रान्ति)

जैनेट एक खुबसुरत जवान लडकी है। वह विमल के बेटे से प्रदीप से बेहद प्यार करती है। जैनेट निम्न जाँति की लडकी है। अब वे ईसाई बन गये हैं। विमल जब जैनेट से शादी करना चाहता है तो विमल के माता पिता परेशान होते हैं। परन्तु सन् 1942 का समय है। प्रदीप को उसकी माँ शारदा ने समझाने का प्रयास किया लेकिन वह अपने ईरादेपर अडिग रहा। वह जाँति पाँति के सारे बन्धन तोडकर वह जैनेट से कोर्ट में जाकर शादी करता है। जैनेट दप-तर में काम करती है। विमल और शारदा से मिलने के लिए विमल जैनेट को लेकर आता है। माता पिता उसे समझाते हैं कि जैनेट का धर्मपरिवर्तन करके वे उसका नाम जान्हवी रखना चाहते हैं ताकि वह शुद्ध हो जाएगी। अगर ऐसा हुआ तो ही वे प्रदीप और जैनेट को अपने घर में जगह देंगे। वे उसे अपनी जायदाद का हिस्सा भी नहीं देंगे। उस समय प्रदीप टस से मस नहीं होता। तो समझदार जैनेट शारदा से कहती है, " मै सब समझती हूँ माताजी ! लेकिन यदि आप जैसी मैं हूँ वैसी ही को स्वीकार नहीं करती तो मैं भी इनको यहाँ रहने के लिए कैसे कह सकती हूँ। "[41] प्रदीप की बहना सुरेखा आकर अपने माता पिता को समझाती है कि धर्म मत और जाति बदल जाने से वह नहीं बदल सकता। कुल जाँति और समाज के भय से शुद्धि का ढोंग करना मनुष्य और मनुष्यता का घोर अपमान है। उसे बेहद खुशी होती है। वह कहती है अगर उसका घर होगा तो वहाँ वह भाई भाभी का स्वागत करेगी। सुरेखा का दरियादिल एवं सलूक देखकर जैनेट सुरेखा से कहती है, " तच सुरेखा बहन, तुमने मुझे बहुत बल दिया। मुझे जीत लिया। मैं अब और भी शान्ति के साथ समाज का मुकाबला करूँगी। "[42]

4) अन्विता (युगे युगे क्रान्ति)

अन्विता जवान खुबसुरत लडकी है। वह प्रदीप और जैनेट की लाडली बेटी है। वह साहसी एवं विद्रोही है। वह मनचली एवं जिद्दी है। वह पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगी हुयी आधुनिका है। माता पिता उसकी शादी दीपक से करना चाहते थे। दीपक से अन्विता प्यार करती थी। दीपक योरोप से वापस लौट

आने के बाद यह शादी होनेवाली है। लेकिन अन्विता चंचल लडकी है। गिरगीट के समान वह रंग बदलतीहै। वह अपनी मर्जी से खुदगर्जी से स्वीड चित्रकार नेलसन से शादी करनेवाली है। वह अपना फैसला अपने माता पिता को भी नहीं बताती। सीधे शादी की निमंत्रण पत्रिका माता पिता को भेजती है। निमंत्रण पत्रिका पढ़कर उसके माता पिता निराश होते हैं। वह माता पिता को यह भी बताती है कि उसका पक्का ईरादा है। उसने दीपक को भी इस सिलसिले में पत्र भेज दिया है। अन्विता पहले दीपक से प्यार करती थी अब शादी कर रही है स्वीड चित्रकार नेलसन से। ऐसी मनचली एवं जिद्दी यह आधुनिका है। वह नेलसन से शादी करके अपने माता पिता से मिलने आती है और उनसे कहती है, " देख लो ममी, तुमने याद किया और मैं आ गयी। फिर न कहना कि मैं तुम से प्यार नहीं करती। (हँसती है) लेकिन मैंने तो सुना है आप मुझसे बहुत नाराज है। हमारे विवाह में भी शामिल नहीं हो रहे। (नाटकीय नि:श्वास खींचकर) आपकी इच्छा है। नेलसन तो यही चाहता है कि ..... "[43]

वह कुछ अलग टाइप की लडकी है। जब तक बनेगी तब तक वह नेलसन के साथ रहेगी। अगर जिस पल दिल चाहेगा उसी पल वह उससे जुदा होगी। आसमान की गोद में उडनेवाले आझाद पंछी की तरह वह है। पश्चिमी तौर तरीके आपनाने वाली वह आधुनिका है।

विद्रोह और साहस :

5) सुरेखा (युगे युगे क्रान्ति)

सुरेखा इक जवॉन लडकी है। वह विमल और शारदा की लाडली बेटी है। उसका भाई प्रदीप ईसाई लडकी जैनेट से शादी करता है। विमल और शारदा चाहते हैं कि जैनेट को शुद्ध करके जान्हवी नाम दे। प्रदीप उसका धर्मपरिवर्तन कर दे तो ही वे उन्हें अपने घर में जगह देंगे। मतलब वे उन्हें अपनायेंगे। लेकिन प्रदीप टस से मस नहीं होता। उस वक्त सुरेखा वहाँ आती है। उसे बेहद खुशी होती है। प्रदीप ने जैनेट से शादी करके क्रांति की है। वह माँ से कहती है, " बिना सहे क्या कुछ होता है, माताजी ? और सहने के लिए जरूरत होती है साहस की तभी क्रांति का जन्म होता है। क्रांति के बिना समाज में परिवर्तन नहीं हो सकता। आपको तो खुश होना चाहिए कि आपके बेटे ने साहस किया। "[44] वह बड़ी कुशलता से अपने माता पिता को समझाती है, " युग की पुकार सुनना यदि रंग चढ़ता है तो मैं इसे अपना गौरव समझूँगी। लेकिन पिताजी, एक बात कहती हूँ, जैसे सागर के ज्वार को आदेश नहीं दिया जा सकता। वैसे ही नयी पीढ़ी की आकांक्षाओं को भी अपनी असुविधा के अनुसार नहीं मोडा जा सकता। आपने उस दिन आदर्श उपस्थित किया था उसका महत्त्व शायद आप भूल गये हैं। आपको यदि उसका एहसास होता तो आज आपकी छाती गजभर चौडी हो जाती। आपके बेटे ने मानवता को बाँटनेवाली एक और दिवार को ढा दिया है।

(माँ की ओर देखकर) और माँ – कम से कम तुमसे तो मुझे यह आशा नहीं थी। तुमने कितनी जंजीरे तोडी, कितना सहा ! यहाँ आकर आज तुम भी हार गयी। मनुष्य मनुष्य है। धर्म मत और जाति बदल जाने से वह नहीं बदल जाता। कुल जाति और समाज के भय से शुद्धि का ढोंग करना मनुष्य और मनुष्यता का घोरतम अपमान है। आप खुश न हो लेकिनमैं खुश हूँ। आज मैं कुछ नहींकर सकती लेकिन जैनेट भाभी कल को जब मेरा अपना घर होगा तो मैं वहाँ तुम्हारा हार्दिक स्वागत करूँगी। "[45]

प्रतिशोध :

प्रतिशोध की भावना नारी मनोविज्ञान की एक अन्यतम विशेषताहै। जहाँ एक ओर नारी प्रेममय है, त्यागी है, वत्सल है वहाँ दूसरी ओर उसके मन में प्रतिशोध या बदलेकी भावना भी उमडकर उद्वेलित होती है। नाटककार ने प्रतिशोध के बारे में नारी पात्रों को सजाया है। प्रमुख पात्रों में डॉक्टर, टगर आदि प्रतिशोध की भावना के बारे में पहले ही लिखा गया है गौण पात्रों में भिक्षुणी और मालती उल्लेखनीय है।

6) भिक्षुणी (नव–प्रभात) :

सम्राट अशोक ने कलिंग पर हमला किया। हजारों लोगों का कत्ल हुआ। सारा कलिंग देश समशान बन गया। लाखों जख्मी एवं घायल हुए। चारों ओर हाहा:कार मच गया। यह सब जंग का अंजाम देखकर मानो तडफती है, इन्सानियत और मानवता सिसकती है। कलिंग के राजा ने अपने वतन के लिये जान की कुर्बानी दी। सम्राट अशोक ने कलिंग के राजकुमार को बन्दी बनाया। यह सब देखकर कलिंग के राजकुमारी के तनबदन में आग ही आग लग जाती है। बदले की आग में वह जलती है। सम्राट अशोक जो उसके पिता का हत्यारा है। जिसने उसके भाई को बन्दी बनाया। जिसकी वजह से स्वर्ग से सुंदर कलिंग उजड गया। समशान बन गया। सम्राट अशोक का वध करने के लिये वह एक गहरी चाल चलती है। वह भिक्षुणी को वेश परिधान करती है। जंग में जो जख्मी एवं घायल हुए उनकी दिलोजान से सेवा करती है। उनको जंग के लिए भडकाती है। उनमें दुबारा जंग के लिये जोश एवं उत्साह पैदा करती है। सम्राट अशोक की सेना उसे गिरप–तार करती है। फिर भी वह टस से मस नहीं होती। वह जिन्दादील नारी है। उसके पास अदम्य साहस और अखण्ड आत्मविश्वास है। गुप्तचर बन्धुजीव भी आकर सम्राट अशोक को यह राज बताता है कि यह भिक्षुणी का सम्बन्ध राजकुल से होगा। अंत में भिक्षुणी को बन्दी बनाकर सम्राट अशोक के पास लाया जाता है। तो यह राज खुल जाता है कि यह भिक्षुणी के वेश में कलिंग की राजकुमारी है। उसने सम्राट की हत्या करने के लिये भिक्षुणी का वेश परिधान किया था। लेकिन भिक्षुराज से प्रवज्या लेने की वजह से प्रतिशोध की भावना नष्ट होती है। युद्ध का अंजाम देखकर सम्राट अशोक का भी मन परिवर्तन होता है। वह कुमार को क्षमा करके उसके उसका राज्य वापस लौटाना चाहता है। लेकिन कुमार जो खुद्दार एवं स्वाभिमानी था। वह किसी की

क्षमा नहीं स्वीकारता। उसे अपना जमीर एवं ईमान प्यारा है। वह चण्डगिरी जल्लाद के हाथ से कटार छीनकर अपनी छाती में भोंकता है। भिक्षुणी को यह खबर मिलते ही वह आकर अपने भाई की लाश से चिपक चिपककर रोती है। पल में उसके दिल में सम्राट अशोक के प्रति दुबारा प्रतिशोध की भावना पनपती है वह अपने तथागत व्रत का त्याग करके सम्राट अशोध का वध करना चाहती है। घुस्से की तैश में आकर वह कहती है, " (तीव्रता से) मैं नहीं चाहती तथागत का व्रत। ले लो अपने वस्त्र। मैं राजकुमारी बनना चाहती हूँ। मैं फिर साधारण नारी बनना चाहती हूँ। मैं प्रतिशोध लेना चाहती हूँ। मैं कलिंग के इस निर्मम महानाश का प्रतिशोध लेना चाहती हूँ। मैं हत्यारे अशोक का वध करना चाहती हूँ। "[46]

अशोक उसके सामने घुटने टेककर अपनी कटार देते हुए उससे कहता है कि वह उसकी हत्या करके बदला ले।

लेकिन राजकुमारी पल में होश में आती है। वह अशोक की हत्या करना नहीं चाहती। उसका मन परिवर्तन होता है।

7) मालवी (गान्धार की भिक्षुणी)

" गान्धार की भिक्षुणी " नाटक में जो " मालवी " है वह इस नाटक की गौण नारी पात्र है। वह देशप्रेमी नारी है। वह देशप्रेमी साथी रण्चण्डी के रूप में चित्रीत हुयी है। वह आजादी की दिवानी थी। वह आनन्दी की सहेली है। वह देशप्रेमी नारी है। देशभक्ति की भावना उसमें कूटकूट के भरी है। मालवा के परिप्राजक महाराज तो नपुंसक एवं कायर थे। हूण सरदार और उसके सैनिकों ने मालव वासियोंपर मनमाने अत्याचार किये। मालवी आनन्दी के साथ घूम फिरकर लोगों के दिल में देशभक्ति की भावना को भडकाती है। उसे हूणों से बदला लेना है। प्रतिशोध की आग में वह जलती है। सैनिकी लिवास पहनकर देशभक्ति के गीत गाती है। वह अबला नहीं तो सबला नारी है। मालवी के पिता सेनापति मारूत मालव देश के सेनापति थे। वे जिन्दादिल साहसी युवक थे। उन्होंने जब परिप्राजक महाराज का विरोध किया तो हूणों ने सेनापति मारूत को सूली पर लटकाया। हूणों के प्रति बदले की भावना उसके दिल में भडकती है। सेनापति मारूत का बदला जब राजा यशोधर्मन हूणों से लेता है। तो मालवी फूले नहीं समाती। वह कीर्तिवर्मा से प्यार करती है। हूणों से बदला लेना ही उसकी जिन्दगी का उद्देश्य बन जाता है। हूणों के प्रति उसके तनबदन में आग ही आग लग जाती है। वह राजा यशोधर्मन से कहती है, "^ मालव वीर ! मालवा आज वह नहीं रहा है जो साल भर पहेला था। हूणों के बढ़ते अत्याचारों ने यहाँ के निवासियों को सचेत कर दिया है। धूल की तरह उन बर्बरों को अन्धा करने के लिए उठ खड़े हुए है वे। उनका क्रोध नपुंसक का क्रोध नहीं रह गया है। वह उबल उठने को आतुर है। "[47] वह अपने प्यारे मालव देश के कुर्बान होना चाहती है। वह महाकाली

बन गयी है। नारी होकर भी हूणों से टकराना चाहती है। इसे अपने देश की आजादी प्राण से प्यारी है। महाकाली बनकर हूण रूपी राक्षसों का संहार करना चाहती है। वह साहसी बनकर नपुंसक एवं कायर महाराज के दरबार में साकी बन जाती है। वह परिव्राजक महाराज की राज सभा में मधुबाला बन जाती है। इस तरह वह देशप्रेमी, रणचण्डी एवं महाकाली नारी है। हूणों से प्रतिशोध लेने के लिए बेताब हो जाती है। राजा यशोधर्मन जब हूणों से बदला लेते हैं तो वह निहाल हो जाती है।

कुण्ठा :

कुण्ठा नारी मनोभाव की मन:स्थिति का एक ऐसा पहलु है जो नारी का दु:ख, दर्द, तडफन, छटपटाहट, आदि को अभिव्यक्त करता है। इस दृष्टि से विष्णु प्रभाकर जी के निम्नलिखित पात्रों को विश्लेषित किया जा सकता है।

8) नीलिमा (श्वेत कमल)

" श्वेतकमल " नाटक में जो नीलिमा है वह नाटक की गौण स्त्री पात्र है। वह हसीन जवॉन, सुन्दर, आधुनिका, अभावग्रस्त, कुण्ठाग्रस्त नारी के रूप में चित्रीत हुयी है। वह कॉलेज में पढ़ती है। वह सुन्दर एवं आकर्षक लडकी है। उसकी सहेली पूनम है। जो ऐसा आकर्षक लिवास पहनती है, मॉडेलिंग का काम करती है। नीलिमा इससे प्रभावित होती है। वह भी चाहती है कि वह भी बन सँवर के, ऊँचा लिवास पहन के बड़ी शान से अनोखी अदा से कॉलेज जाय। लेकिन उसका सपना सपना रह जाता है। भरा पूरा परिवार है। नीलिमा की बड़ी बहेना मतलब दीदी जिसका नाम बिन्दु है दफ्तर में काम करती है। वह चार पैसे कमाती है इन पैसों से परिवार का गुजारा होता है। रूखी सुखी रोटी नसीब होती है। लेकिन बिन्दु भी बार बार नौकरी छोडकर घर में बैठती है। इसकी वजह से नीलिमा परेशान होती है। उसे बार बार यह चिंता सताती है कि अब परिवार का गुजारा कैसे होगा ? अपनी गरीबी हालात की वजह से वह न मनपसन्द कपडा पहन सकती है न अच्छे ढंग का खाना खा सकती है। वह कुण्ठा ग्रस्त बन जाती है। वह अपना दुखडा अपनी सहेली पूनम को बतीती है " शौंली न लागूँगी तो और क्या लागूँगी। किस्मत में यही लिखाकर लाये है हम। घर में एक एक पैसे के लिए दाँना- किल किल मची रहती है। माँ खट-खटकर पंजर बन गयी है। हमे कपडा तो क्या, ढंग का खाना तक नसीब नहीं होता। और दीदी है कि हर तीसरे महिने नौकरी छोडकर बैठ जाती है "[48] इसतरह वह अभावग्रस्त एवं कुण्ठाग्रस्त लडकी है। अपनी गरीबी हालात की वजह से उसके अरमानों का खून हो जाता है। वह अपना दर्द माँ को बताती है वह अपनी माँ से कहती है, " मैंने तुम से कहा ही क्या है जो तुम इतनी बिगड रही हो। कितनी पुरानी हो गयी है यह बेल बॉटम। कभी का बीत गया इसका फैशन। पहनने शर्म आती है। एक पठानी सूट के लिए कहतें कहते जीभ घिस गयी पर हमारे

भाग्य में यह सब कहाँ। हम तो अभागे है अभागे। "[49] इस तरह वह कुण्ठाग्रस्त लडकी है।

9) रामकली (युगे युगे क्रान्ति)

युगे युगे क्रान्ति नाटक में जो रामकली है वह सुन्दर जवॉन नारी है। वह शर्मो हया की पुतली है। सन् 1857 का जमाना है। उसवक्त जाँति पाँति का बोलबाला है। छूत अछूत के बन्धन कडे थे। रामकली के पति का नाम कल्याण सिंह है। उस जमाने में पति पत्नी इक दूजे से दिन में मिल नहीं पाते। घर में जो बुजुर्ग थे उनका परिवार के हर इक आदमी पर गहरा दबाव था। कल्याण सिंह रात के अंधेरे में चोरी चोरी एवं चुपके चुपके से अपनी पत्नी के पास आता है। कमरे में रोशनी भी नहीं थी। वह अपनी रामकली का मुखडा देखने के लिए जल बिन मछली के समान मचलता एवं तडफता है। वह अपनी बीबी का सुन्दर मुखडा देखने के लिए बेताब हो गया है। वह रात के अन्धेरे में पलंग से टकराता है। पत्नी से कहता है, " टकराऊँ न तो क्या हो। कितना अंधेरा है। मैं कुछ भी तो देख नहीं सकता। क्या तुम इतना भी नहीं कर सकती कि एक अच्छा सा तेज रोशनी वाला दिया जला लो ?

रामकली : तेज रोशनी करके क्या मुझे जग हँसाई करानी है। मैं क्या कोठीवाली हूँ ?"[50]

उस जमाने में कुलीन खानदान में यह रस्म एवं रिवाज था कि पति पत्नी दिन में मिल नहीं पाते। बातें करना तो बहुत दूर की बात थी। वह दबावग्रस्त नारी थी। भँवर में पड़ी हुयी लकडी के समान उसकी अवस्था हो जाती है। रामकली अपने पति को समझाती है " हम कुलीन लोग है। हमारी यही कुल-रीत है। बड़े बुजुर्गों के रहते जवॉन लोग अपनी घरवाली का मुख मुँह नहीं देखा करते। दिन में उनके पास नहीं आते। यह बेशर्मी और बेअदबी है। "

इसतरह वह भी दबावग्रस्त नारी है। परिवार के बुजुर्गों का उसपर गहरा दबाव है। उसके भी दिल में पति को मिलने एवं मुखडा देखने की अरमान है। दोनों का यह वार्तालाप देखिए।

कल्याण सिंह : सच सच बताना, तुम्हारा मन नहीं करता कि तुम मुझे देखो ? बोला ना। जबाब क्यों नहीं देती ? इसका मतलब है कि तुम्हारा मन भी करता है। करना भी चाहिए।

रामकली : (झिझकते हुए) करना तो है, लेकिन मन तो बहुत सी ऐसी वैसी बातों को करता रहता है। वे क्या सभी माननी चाहिए। हमारे बड़े कहते हैं कि मन के बस में नहीं होना चाहिए। उसकी आवाज नहीं सुननी चाहिए। उसे दबाना चाहिए। फिर भी यह सच है कि मेरा मन तुम्हें अच्छी तरह देखने को करता है। "[51]

इस तरह वह दबावग्रस्त एवं कुण्ठाग्रस्त नारी है।

द्विधा मन :

नारी मन की स्थिति प्रसंगवश द्विधा हो जाती है। केवल नारी की ही नहीं तो पुरूष की भी स्थिति द्विधा हो सकती है। लेकिन अध्ययन की दृष्टि से नारी पात्रों को ही प्रमुखता दी गयी है। द्विधा मन:स्थिति मुख्यतया परिस्थितिजन्य और प्रभावजन्य परिलक्षित होती है।

10) महादेवी (सत्ता के आर-पार) :

सत्ता के आर-पार नाटक में जो महादेवी है। इस नाटक की गौण नारी पात्र है।यह बाहुबली की महारानी है। वह शान्त, सौम्य और रूपवती नारी है वैसा ही उसका तेजोदीप्त व्यक्तित्व है। सम्राट भरत ने चक्रवर्ती पद पाने के लिए छ: खण्डों के सुरेसों का, देवो दानवों का सभी का मान मर्दन कर दिया है। लेकिन फिर भी जब तक शक्तिशाली बाहुबली जाकर उन्हें प्रणाम नहीं करेंगे तब तक उन्हें चक्रवर्ती पद की प्राप्ति नहीं होगी। बाहुबली को यह बात पसन्द नहीं कि वे किसी राजराजेश्वर को प्रणाम करें। तब महादेवी उन्हें बड़े प्यार से समझाती है कि " यही कि भगवान आदिनाथ ने जो आपके और जीजा जी दोनों के पिताश्री भी है उन्होंने नया रूप दिया है समाज को। उन्होंने बताया है कि सभ्य वहीं है जो हिंसा से दूर है। "[52] सम्राट भरत और शक्तिशाली बाहुबली दोनों में धर्मयुद्ध द्वारा हार जीत का फैसला होगा। इस धर्मयुद्ध में सेनाएँ युद्ध नहीं करेंगी। दृष्टि युद्ध, जल युद्ध और मलयुद्ध जो इन तीनों युद्धों में को जीतेगा वही विजेता घोषित होगा। ऐसा ऐलान किया जाता है। यह जब महादेवी को खबर लगती है तो महादेवी उद्विग्न होती है। सारी रात वह जागती है। उसकी आँखों में रात समा जाती है। उसके दिल में मानसिक द्वंद्व पनपता है। क्योंकि सम्राट भरत तो उसके जीजी है। इस युद्ध का अंजाम क्या होगा ? यह सोचकर वह उद्विग्न होती है। दोनों भाईयों में जब अहिंसक जंग शुरू होती है। तो महादेवी सखी से कहती है, " (विचलित-सी) युद्ध आरम्भ हो गया। अहिंसक युद्ध (एकाएक हँसती है) अहिंसा और युद्ध। (अल्प विराम) मैं भी युद्ध देखू इस विचित्र युद्ध को। रानियाँ तो हिंसक संग्राम में भी पति की सहगामिनी बनी है। (सहसा विचलित होकर) पर नहीं, मैं दो भाईयों को लडते देख नहीं सकती। एक ओर मेरे प्राणाधार, दूसरी ओर मेरी दीदी के प्राणाधार ... किस की जीत, किस की हार (अल्पविराम) फिर भी एक तो जीतेगा ही। (अल्प विराम) कौन जीतेगा, मेरे प्रियतम ? हाँ वे ही जीतेंगे। दोनों तेजपुंज है पर मेरे प्रियतम की सुदीर्घ देहयष्टि (सहसा सेना की तुमुल हर्षध्वनी उठती है) किसकी सेना ने हर्षध्वनि की ? कौन जीता ? (पुकारकर) कोई है ? "[53]

जब सखी आकर कहती है कि दृष्टियुद्ध में बाहुबली की जीत हुयी तो पल में महादेवी हर्षित होती है और कुछ पल दो पल गुजरने के बाद मायूस बन जाती है। " महादेवी - (आकस्मित हर्ष से विभोर) मेरे

प्रियतम जीत गये। नेत्र मूँद लेती है। मेरे प्राणाधार जीत गये। (सहसा चिहुँककर) लेकिन किसको पराजित किया उन्होंने (अल्पविराम) मेरे जीजाजी को .... (विषाद) यह सुनकर मेरी दीदी की क्या अवस्था हुई होगी। (स्वर धीमा पडता जाता है) उनका मुख मण्डल म्लान हो गया होगा। फिर शायद मेरा खयाल आया होगा उन्हें। वे मुस्कुरायी होगी। अपने पति के पराजय के बाद मुस्कुरा सकेगी वे ? (दर्द से तडफकर) मैं उल्हासित होकर उदास होऊँ ? क्या करू मैं ? हँसू कि रोऊँ ... रोऊँ कि हसूँ ? (विचलित सी शय्या पर गिर पडती है। मातुश्री उन्हें संभालती है।) "[54] दृष्टियुद्ध में सम्राट भरत की हार हो गयी। यह खबर सुनकर जीजी पर क्या गुजरेगी। यह शंका आशंका उसके दिल में पनपती। मानसिक द्वन्द्व उसके दिल में पनपता है।

शंका और ईर्ष्या :

नारी मन की एक प्रमुख विशेषता यह है कि पुरूष की अपेक्षा नारी अधिक शंकालु होती है। ऐसा माना जा सकता है। विशेषत: पुरूष के प्रति या अन्य किसी घटना के प्रति उसके मन में शंका पैदा होती है। नारी की यह मनोदशा प्रासंगिक और उसके अंर्तद्वंद्व से संबधित रहती है।

।।) विमला (टगर) :

विमला यह " टगर " नाटक की गौण नारी पात्र है। ईर्ष्यालु, शकी नारी के रूप में उसे विष्णु प्रभाकर जी ने चित्रीत किया है।

वह डॉक्टर साहब की पत्नी है। उसकी उमर 30-35 साल की है। टगर और ठाकूर साहब दोनों नाजिम साहब के बंगले में ठहरें हुए है। वहाँ ताश नारा खेलने के लिए माथुर और डॉक्टर आते हैं। डॉक्टर साहब अपनी पत्नी विमला से डरते हैं। वे उससे छिपकर चोरी चोरी से आते हैं। टगर का रंग रूप देखकर माथुर जो माने पागल बन गये हैं। डॉक्टर भी टगर से प्रभावित है। वे उसके रंग रूप एवं दर्दभरी आवाज की प्रशंसा करते हैं लेकिन साथ ही साथ अपनी पत्नी विमला से भी डरते हैं। विमला जुबान को तेज है। उसे पूरा विश्वास होता है कि टगर ने उसके पति पर जादू किया है लेकिन फिर भी वह खुल्लमखुल्ला अपने पति से कहती है, " (पास आकर) यह काम तो आप मेरी आँखों के सामने बैठकर भी कर सकते हैं। हाँ, यह बात दूसरी है कि मेरे पास न टगर जैसा रूप है और न वैसी बातें करने की आदत है। अब मेरी ओर ऐसे क्यों देख रहे हो ? उठो न। "[55]

डॉक्टर साहब डरते है उसकी झूठी प्रशंसा करते हैं तो वह कहती है, " (एकदम बिगडकर) साफ क्यों नहीं कहते कि मैं बुरी हूँ, टगर भली है। क्योंकि वह साँवली है। लेकिन सुन लो, मैं काली हूँ या गोरी, भली हूँ या बुरी, तुम मुझे छोड़ नहीं सकते। अब उठो और चलो। "[56]

विमला को टगर से ईर्ष्या होती है और उसके दिल में यह शक पैदा होता है कि न जाने टगर उसके पति को अपने चंगुल में फँसाएगी। इसलिए बार बार टगर के यहाँ आकर अपने पति को वहाँ से लेकर जाती है।

मनमौज :

अपवादभूत रूप में नारी में नारी के मन की एक विशेषता यह ळे कि, यह मनमौजी भी है। चैन, ऐशोआराम आदि में अपना जीवन व्यतीत करना वह अपनी जिन्दगी की सार्थकता समझती है। वह अपनी मर्जी से मनमाना जीवन व्यतीत करना चाहती है। यह नारी विवाहीत होकर भी विवाह को महत्त्व नहीं देती बल्कि अपने मनमाने क्रियाव्यापारों को महत्त्व देती है।

12) रीना (युगे युगे क्रान्ति)

रीता जवाँन हसीना है। वह सुन्दर लडकी अनिरूद्ध से प्यार करती है। अनिरूद्ध प्रदीप और जैनेट का जिन्दादिल जवाँन बेटा है। रीता के पिता बंगाली और माता डच है। रीता आधुनिक नारी है। वह पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगी हुयी है। वह शादी को आजादी नहीं तो बरबादी मानती है। जब तक निभेगी तब तक वह अनिरूद्ध के साथ रहेगी। वह दुनिया एवं दुनियादारी की परवाह नहीं करती। जैनेट उसे बड़ी कुशलता से समझाती है। जैनेट कहती है, " स्त्री सदा स्त्री है। पीढ़ीयाँ उसके स्वभाव में परिवर्तन नहीं कर सकती। हमारे पुरखे मुर्ख नहीं थे। लाखों वर्षों के अनुभवों के बाद उन्होंने विवाह संस्कार को स्वीकार किया था। संगिनी रखना तो ऐसे ही हुआ जैसे कोई रखेल रख ले।

रीता – (कानों पर हाथ रखकर) ओह गॉड ! आपके विचार कितने दलियानूसी है। मैं कहती हूँ, मुझे अनिरूद्ध अच्छे लगते है। मेरा मन उनके साथ रहने को करता है। मैं रहती है। जब तक हम एक दूसरे को प्रेम कर सकेंगे, रहेंगे। नहीं कर सकेंगे तो अलग हो जायेंगे। "[57]

रीता की बातों से प्रभावित होकर अनिरूद्ध भी हाँ में हाँ मिलाता है। प्रदीप और जैनेट दोनों को समझाते है कि वे अपने भविष्य की चिन्ता करें। तब रीता कहती है, " ओह भाई गॉड ! आपको भविष्य की बड़ी चिंता है। लेकिन हमें नहीं है। हम स्वयं उसके निर्माता है। हम नहीं चाहेंगे तो सन्तान कैसे हो जाएगी ? और जब चाहेंगे तो उसके वर्तमान पर अपने अतीत को नहीं लादेंगे। "[58]

इसतरह रीता एकदम फॅशनपरस्त, पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगी हुयी आधुनिक लडकी है।

यौनाचार :

प्रेम और यौन नारी के मनोविज्ञान के महत्त्वपूर्ण पहलू हे। नारी मनोविज्ञान में प्रेम के साथ ही साथ यौनाचार का भी महत्त्व है। आज की नारी अपनी जिन्दगी में यौनाचार को अधिक महत्त्व देती है। जो

स्वच्छंदी जीवन बिताना चाहती है। मानव मूल्य का विघटन नैतिक दृष्टि से प्रचुर मात्रा में इस यौनाचार के कारण ही दिखायी पडता है जो यौनाचार संमत नहीं बल्कि स्वेच्छाचारी है स्वैराचारी है।

13) पूनम (श्वेत कमल) :

पूनम एक सुन्दर आकर्षक और 20-21 साल की जवान लडकी है। वह एकदम फॅशनपरस्त जीतधारी आधुनिका है। वह प्रतिदर्श एवं मॉडेल गर्ल है। इसकी सहेली नीलिमा है। चॉदी के चन्द सिक्कों के लिए और कागज के नोटों के लिए वह अपनी टाँगे एवं छातियाँ दिखाने में नहीं हिचकिचाती। वह शराब भी पीती है। देखा जाय तो यह सच्ची बात है कि वह कॉल गर्ल है। अकसर होटल कैमिलो में जाती है। वेश्या और कॉलगर्ल के रूप में नारी का अंकन परम्परागत ढंग से हटकर आधुनिक उपन्यासों में मिलता है। देखा जाए तो कोई भी स्त्री स्वेच्छा से वेश्या नहीं बनना चाहती। सामाजिक परिस्थितियाँ उन्हें इस राहपर ले जाती है। इस मँहगाई के दौर में अपनी मर्जी से जिन्दगी जीने के लिये शरीर व्यापार द्वारा ही अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की वह पूर्ती करती है। पूनम अपनी जिगरी सहेली नीलिमा से कहती है, " पता नहीं यार, बहुत से लोग बहुत सी बातें करते हैं। मैं अपनी बात कहती हूँ। कुछ लोग कहते हैं कि स्त्री को अपने शरीर को उघाडना नहीं चाहिए पर मॉडेलिंग में तो लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए अपनी छातियाँ और टाँगे दिखानी बहुत जरूरी है। मुझे तो ऐसा करते हुए जरा भी बुरा नहीं लगता।

नीलिमा : (चकीत) तू छाती और टाँगे नंगी करती है।

पूनम : कहा न यार ! करनी जरूरी है। यह चोरी नहीं है, खुला व्यवसाय है। जो खुला है, वह बुरा नहीं होता। बुरा परदा है। "[59]

वह प्रतिदर्श नारी है। अहिस्ता अहिस्ता वह मॉडेल गर्ल से कॉलगर्ल बन जाती है। पापी पेट का सवाल हल करने के लिये या जिन्दगी अपनी मर्जी से गुजारने के लिए वह होटल कैमिलो में अक्सर जाती है। वहाँ जाकर वह अपने जिस्म का सौदा करती है। वह हमेशा अपनी मस्ती में मस्त एवं नशे में चूर होती है। उसके लिए जिन्दगानी में पैसा ही सब कुछ है। वह नीलिमा को भी अपने रंग में रंगाना चाहती है। उसका नीलिमा से कहना है, " अरे पैसा ! पैसा ही आधार है जीवन का .... देख, इस पठानी सूट में तू कैसी मारू लग रही है। और अगर तू पहनने लगे तो पाँच सौ कहीं नहीं गये एक रात के। चल, आज तू भी चल न मेरे साथ। "[60] वह चरित्र हीन नारी है। पैसों के हवस के लिए वह प्रतिदर्श से कॉलगर्ल बन गयी है।

पागलपन :

कभी कभी मानव मनपर कुछ ऐसे आघात होते है कि उनकी वजह से नारी पागल बन जाती है। मानसिक रोगिणी की दृष्टि से स्त्री का पागलपन रेखांकित करने में विष्णु प्रभाकर जी कामयाब हुये हैं।

14) नीरू (डॉक्टर) :

" डॉक्टर " नाटक में जो नीरू है वह डॉ. अनीला के अस्पताल की सबकी मरीजा है। वह पागल, स्पष्टवक्ता एवं मुँहजोर नारी के रूप में चित्रीत हुयी है। उसकी उमर 35-36 साल की है। उसके सिरपर यही पट्टी बँधी हुयी है। अस्पताल के सारे लोग उसे पागल समझते हैं। उसपर पागलपन सँवार है। लोग उसकी हँसी उडाते हैं। वह सबकी मरीजा है। हमेशा विक्षिप्त एवं मुडी रहती है। पागल एवं विक्षिप्त मरीजा है फिर भी उसके दिल में कर्तव्यदक्ष कुशल डॉक्टर अनीला के प्रति इज्जत है। नीरू के बारे में डॉ. सईदा जो अनीला की सहयोगी डॉक्टर है नीरू को देखकर वह कहती है " लो वह आ गयी, थिंक आव दी डैविल एण्ड शी इज देयर।

दादा : (एकदम) नीरू, यहाँ कैसे आयी ?

नीरू : चल कर दादा। अपने बोलने को मना किया है, चलने को नहीं।

सईदा : नीरू जी आप इतनी समझदार है, फिर भी

नीरू : समझदार हूँ तभी तो आना पड़ा। समझती हूँ कि चलने फिरने से खाना-पीना पच जाता है। विचार तक पक जाते हैं। मुझे आप सभी आधी पागल कहते हैं। ....

दादा : जब कि तुम पूरी पागल हो। "[61]

डॉ. अनीला के नर्सिंग होम में काम करनेवाले हर इक को वह मशीन समझती है। उसके बात करने का अन्दाज ही कुछ ऐसा है सुननेवाले को पूरा यकीन होता है कि यह अस्पताल की सनकी मरीजा है। वह हर इक को अपने नजर अन्दाज से देखती है उसकी बातों की सब लोग हँसी उडाते हैं। लोग उसे जलील करते हैं। जहाँ भी वह जाती है वहाँ हँसी का आलम छा जाता है। उसपर पागलपन सँवार है। इसका असर यह होता है कि उसके बात करने का ढंग ही कुछ अलग ही है। पागल है साथ साथ वह जुबान की तेज भी है दादा जब उसे पागल कहते है तो वह ईंट का जबाब पत्थर से देती है वह दादा से कहती है, " (चमककर) पूरे पागल आप है। हमेशा हिसाब करते हैं और हिसाबदान्त पूरे पागल होते हैं। "[62] उसपर पागलपन सँवार है। अस्पताल के सारे लोग उसे सनकी एवं विक्षिप्त मरीजा मानते हैं लेकिन उसका दिल मोम जैसा है।

15) सावित्री (बन्दिनी) :

सावित्री ममतामयी नारी है। उसके पति का नाम उपेन्द्र है। सावित्री जमींदार कालीनाथ की बड़ी बहू है। वह अपनी छोटी देवरानी उमा को अपनी बेटी मानती है। सावित्री के इकलौते नन्हे मुन्हे मासूम बच्चे का नाम अन्नु है। जो हरपल उमा के साथ रहता है। उमा भी उसे अपना लगते जिगर बेटा मानती

है। उपेन्द्र और सावित्री को ऐसा लगता है कि अन्नु उमा का ही बेटा है। इक दिन का जिक्र ऐसे होता है कि अन्धविश्वासी जमींदार कालीनाथ सपना देखते हैं। सपने में कालीमाता ने जो आदेश दिया वह सच मानकर उमा को ही सचमुच कालीमाता समझते हैं। दबाव से उसे पूजास्थल पर बिठाते है। उसकी पूजा करते है। बेचारी उमा बार बार सच्चाई बयान करती है कि वह उनकी छोटी बहू है लेकिन ससुरजी पर कुछ असर नहीं होता। वे उमा को कालीमाता का रूप मानकर वे उसकी पूजा करते हैं। गाँव के सारे लोग भी उसकी पूजा करते हैं। ससुरजी का यह सलूक देखकर उमा तो मानों पागल बन जाती है। तो ममतामयी सावित्री उसे दिलासा देती है। उमा बन्दिनी बन जाती है। हालात का उस उमापर इतना असर होता है कि बातों बातों में वह भी अन्धविश्वास का शिकार बन जाती है। बिमारों को चरणामृत लेकर दिया जाता है। लेकिन जब अन्नु को सरल बुखार आता है। सावित्री अपने बेटे का ईलाज वैद्यजी से करना चाहती है। लेकिन ससुरजी कालीनाथ इनकार कर देते हैं। वे देवीमाता से मतलब उमा से उस बच्चे का ईलाज करना चाहते हैं। देवी का चरणामृत बच्चे को पिलाया जाता है। कुछ घण्टे गुजरने के बाद अन्नु मर जाता है। सावित्री के दिलपर गहरी चोट लग जाती है। वह उमा को बच्चे की हत्यारिन मानती है। अन्नु के मरने का एक मात्र कारण उमा को मानते हुए घुस्से की तैश में आकर वह उमा से कहती है – " अरी कुटिल डायन ! जिसको प्यार किया उसी को डस लिया। तूने यह ढोंग मेरी कोख को उजाडने के लिए ही किया ? तेरी कोख तो हरी नहीं हो रही थी, इसलिये। "[63]

वह घुस्से की तैश में आती है। उसकी जुबान कैंची के समान चलती है। वह उमा को भला बुरा कहती है। उमा को वह डायन कहती है। अपने बच्चे की कातिल मानती है।

16) अम्मुकुट्टी (केरल का क्रान्तिकारी)

अम्मुकुट्टी साहसी जिन्दादिल एवं देशप्रेमी नारी है। वह केरल के क्रांन्तिकारी वेनुतम्पी दलवा को दिलोजान से चाहती है। दलवा भी उसे अपनी चेतना मानता है। दलवा और किरंगियों की जंग होती है। बदनसीब दलवा की हार हो जाती है। दलवा अपने राज्य को बचाने के लिए अपने महाराज केपास जाकर अनुरोध करता है कि वे उसे बाजी घोषित करें। आखिर टूटे हुए दिल से महाराज यह घोषित करते हैं कि जो दलवा को जिन्दा या मुर्दा पकडेगा उसे 5000/– रू. ईनाम दिया जायेगा। कुछ दिन के लिये दलवा जंगल में छुप जाता है। उसे समय की तलाश है समय आनेपर वह नयी उमंग से फिरंगीयोंपर हमला करना चाहता है। दलवा और उसका भाई पद्मनाभन मण्णाटि भद्रकाली क्षेत्र में शरण लेते हैं। लेकिन देवी के मन्दिर में मठाधिकारीउन्हें प्रवेश नहीं देते। तो वहाँ से कुछ दूरीपर नारियल और केलों की पत्तों की छाया में एक छोटा सा देवी का मन्दिर था। वहाँ छिप जाते हैं।

वह देवी के मन्दिर में अपने वतन के लिए रक्तदान करना चाहता है। जब वहाँ से फिरंगी गुजरते है। लेकिन दलवा दुश्म के हाथ नहीं पडता चाहता। वह आत्महत्या करता है। फिरंगी उसकी लाश ले जाकर कण्णनमूला में लटकाते है। और फिरंगी सब नागरिकों को यह हुक्म देते हैं कि बगावत करने का अन्जाम क्या होता है इस लाश को आकर देखे और सबक ले। यह सब देखकर अम्मुकुट्टी के दिलपर सदमा पहुँचता है। उसके सारे सपने मिट्टी में मिल जाते हैं। उसकी अरमानों का खून हो जाता है। उसके ज्जबात मचलते हैं। उसपर जुनुँन सॅवार होता है। वह पागल बन जाती है। पगली बनकर ईशारे करती हुयी कहती है – " मैंने तुम्हारी बातें सुन ली हैं। जोर से मत बोलो। अब तो हवा से भी डर लगता है। चुगली खा देगी वह भी किसी से। अभी अभी उसने किसी से कहा था कि अम्मु ने तो बेलि से प्यार किया था। बेलि ने आत्महत्या कर लेने पर वह जिन्दा कैसे है ? पगली हवा इतना भी नहीं जानती कि अवसान शरीर का होता है। चेतना तो अमर है। (पास आकर) तुमने ठीक समझा है। दलवा ने आत्महत्या नहीं की है। स्वाधिनता की बलिवेदी पर रक्त से तर्पण किया है। बिना दिये कुछ मिलता है क्या ? (हँसती है) ये फिरंगी कायर ही नहीं, मूर्ख भी है। कहते हैं, दलवा की लाश को सूली पर लटकायेंगे, लेकिन यह लाश दलवा की है कहाँ ?

नागरिक : (सामूहिक स्वर) लाश दलवा की नहीं तो फिर किसकी है ?

अम्मुकुट्टी: उनकी अपनी। अपनी लाश को सूली पर लटका कर वे हमें डराना चाहते हैं। "[64]

वह पागलपन से नाचती है, गाती है। यंत्रवर्त मार्च करती हुयी गीत गाते हुए आगे बढ़ती है। विमोह का गीत गाती है। बालन पिन्टे नागरिक से पूछता है –

" एक कौन था यहाँ ? कौन गा रहा था विद्रोह के गीत ?

नागरिक : एक पगली थी हुजूर। वह कुछ गा रही थी। मैं समझ नहीं सका। पगली की बात कोई समझता है क्या ? "[65]

लेकिन बालन पिल्ले को पूरा विश्वास होता है कि यह पागल औरत यकीनन अम्मुकुट्टी ही है। वह उसे पकडना चाहता है। तो नागरिक हँसते हुए कहता है –

" मूर्ख कहीं के। उसे पकडेंगे। किसी की चेतना को भी कोई पकड़ सकता है ? फिर भी चलूँ, उसे लेता हूँ। "[66]

अपने प्यारे वतन के दलवा ने आत्महत्या की। उसकी लाश की फिरंगीयों ने बेइज्जती की। यह सब देखकर अम्मुकुट्टी के दिलपर गहरी चोट लगती है। इतना गहरा सदमा पहुँचा कि वह पागल बनी। उसपर जुनून सॅवार हो गया।

17) मालती : (कुहासा और किरण)

मालती इक बदनसीब नारी है। आज वह बूढ़ी हो गयी है। गरीबी इतनी है कि उसे दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती। उसके पति डॉ. चंद्रशेखर देशप्रेमी थे उसके चार दोस्त थे। पाँच व्यक्तियों ने भारत माता को आजाद करने के लिए " भारत छोडो आन्दोलन " में हिस्सा लिया। सरकार ने उन्हें जेल में बन्द किया। पाँच व्यक्तियो में से कृष्णदेव मुखबिर बना। उसने अपने यारों से गद्दारी की। इसका अंजाम यह हुआ कि ब्रिटीश सरकार ने उनपर सितमगर बनके सितम ढाए। मनमाने अत्याचार किये। उन्हें कड़ी सजाएँ फर्मायी। उसके पति जेल में बिमार पड़े। उन्हें तपेदिक की बिमारी हुयी। सजा भुगतकर वे घर वापस आये। दवादारू का प्रबंध गरीबी की वजह से नहीं हुआ। अन्त में वे मर गये। मालती के दिलपर गहरी चोट लगी। राजनीतिक पीड़ितों को जो पेंशन मिलती है वह भी उसे नहीं मिलती। पेशंन के कागजात लेकर तीन साल से दर दर भटकती रही। लेकिन उसपर नेता ने दस्तखत नहीं किये। बड़ी आशा से वह नेता कृष्णचैतन्य के पास आती है। लेकिन वह भी सारी दर्दभरी कहानी सुनने के बाद डर या शक के मारे उसपर दस्तखत नहीं करते। नेता उसे जलील करते हैं। संपादक बिपिन बिहारी पेंशन के लिए उसका हाथ बटायेंगे। गायत्री देवी के मरने से नेता कृष्णचैतन्य का मनपरिवर्तन होता है। वे यह राज की बात टुमटा साहब को बताते हैं कि मालती देवी की पेंशन को ही लेते थे। अब मालती के पेंशन का प्रबंध हो गया तो बार बार पेंशन कि चिंता करने से, गिडगिडाने से उसपर जुनज एवं पागलपन सवॉर हुआ है।

लेकिन मालती को विश्वास नहीं होता। वो तो मानो पागल बनी है। वह आम आदमी को भी नेता मानकर यह कहती है, – " तुम नेताजी नहीं हो ? तुम ही तो भाषण दे रहे थे। भाषण देनेवाले नेता ही तो होते हैं। वे कहते हैं अभी एक साल लगेगा पेंशन मिलने में। आप चलकर कहिए न आदरणीय नेताजी .... "[67]

तो उसका यह हाल एवं पागलपन की दशा देखकर प्रभा कहती है, " (अल्पविराम, दूर खोयी–खोयी) कितनी ही चिल्लाओ, पर मालती बुआ अब ठीक नहीं हो सकती। क्या यह भी आत्मघात ही नहीं है। अमूल्य ? क्या आत्मघात ही अंतिम लक्ष्य है मानव का ? "[68]

प्रेतात्मा :

नाटककार विष्णु प्रभाकरजी ने अपने " श्वेत कमल " नाटक में प्रेतात्मा को भी चित्रीत किया है। और " रंजना का प्रेत " पात्र का महत्व इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। असफल प्रेमिका का पागलपन दिखाया गया है। प्रेतात्मा की परिकल्पना में नारी के मानसिक द्वंद्व को नाटककार ने चित्रीत किया है। यह एक पात्र सृष्टि का नया प्रयोग ही है।

18) रंजना का प्रेत (श्वेत कमल) :

" श्वेत कमल " नाटक में रंजना गौण नारी पात्र है। वह मर गयी है। लेकिन नाटक में रंजना का प्रेत बार बार उभरता है। देखा जाय तो नाटक की मुख्य नारी पात्र बिन्दु है। उसका मानसिक द्वंद्व का चित्रण करते समय नाटककार विष्णु प्रभाकर ने बड़ी कुशलता से इसका चित्रण किया है। रंजना बिन्दु की बहना थी। वह भोलीभाली एवं स्वच्छंद नारी थी। वह एक युवक से प्रेम करती थी। अपने प्रेमी के ईश्क में वह पागल बन जाती है। एक दिन अपने प्रेमी के साथ घर से रफूचक्कर हो जाती है। लेकिन प्रेमी एक नम्बर का दगाबाज एवं वेहशी दरिन्दा निकला। उसने उसे वेश्या बनाना चाहा। तो रंजना के दिलपर गहरी चोट लग गयी। उसने आत्महत्या की। लेकिन लोग ये राज नहीं जानते। लोग ये समझते हैं कि रंजना नर्स बनकर परदेश में काम करती है। वह ईसाई नारी बन गयी है। बिन्दु के दिल में मानसिक द्वंद्व जब बार बार पनपता है रंजना उसे बार बार उसे अनोखी अदासे समझाने का प्रयास करती है कि वह भूलकर आदर्शवाद के चक्कर में न पड़े। उसे हालात से समझौता करना चाहिए। अपना और अपनी बहनों का जीवन खुशीयों से भर देना चाहिए। ऐखा जाय तो रंजना का प्रेत बिन्दु की ही अर्न्तरात्मा है। यह उसकी आत्मा की ही आवाज है। जो पग पगपर उसे रास्ता बताती है। उसका पथप्रदर्शन करती है। अंत में रंजना बिन्दु को समझाती है, " (हँसती है) और तुम फिर भुल गयी कि मैं तो सदा तुम्हारे साथ रहती हूँ पर तुमने मेरी बात नहीं सुनी। अन्तिम अवसर भी खो दिया। पुरूष का कोई विश्वास नहीं। विकास कब तक तुम्हारी राह देखता बैठ रह सकता है ? "[69] वह उसे समझाती है कि अब भी वह विकास के पास लौट जाए। लेकिन बिन्दु उस से मस नहीं होती तो रंजना अन्तिम मोडपर कहती है, " मैं तो तुम्हें छोड गयी थी पर तुम ही मुझे नहीं छोड पा रही जीजी। क्योंकि तुम जानती हो कि मेरा तुम्हारे साथ रहना ही तुम्हारी शक्ति है। "[70] बिन्दु भी हाँ में हाँ मिलाती है।

प्रेतात्मा का चरित्र चित्रण और उसका मानसिक द्वंद्व नाटककार ने पूर्वदीप्ति शैली में (फ्लश बॅक स्टाइल) रेखांकित किया है। जो चरित्र सृष्टि के शिल्प की दृष्टि से अभिनव प्रयोग है।

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि :-

(1) विष्णु प्रभाकर नारी-मनाविज्ञान के सच्चे पारखी है और इस दृष्टी से उन्होंने अपने नाटकों में नारी-पात्रों का चित्रण किया है।

(2) उन्होंने अपने नाटकों में नारी पात्रों की विभिन्न मानसिक दशाओं का बडा ही मार्मिक विश्लेषण किया है, जिनमें प्रेम, विद्रोह, वात्सल्य, प्रतिशोध, कुंठा, ईर्ष्या आदि प्रमुख है।

(3) आज का मानव टूटा है, आज की स्त्री टूटी है जो वर्तमान जीवन की सही पहचान है। इस दृष्टी से विष्णु प्रभाकर जी ने कुछ नारी पात्रों के खंडित या विभाजित व्यक्तित्व को शब्दांकित किया है।

(4) उन्होंने अपने नाटकों के नारी पात्रों में यौनाचार को भी अंकित किया है; लेकिन उनमें अश्लिलता के दर्शन नहीं होते।

(5) आज के वैज्ञानिक युग में प्रेतात्मा को चित्रित करके उसकी मानसिक दशा का एक अलग रूप दर्शाया है।

(6) आमतौर पर उनके नाटकों के नारी पात्र मनोविज्ञान के निकष पर प्रचुर मात्रा में खरे उतरते हैं।

संदर्भ –

1. नाटक में पात्र और चरित्र सृष्टि का महत्त्व
2. हिन्दी साहित्य :विधाएँ और दिशाएँ –डॉ शशिभूषण सिंहल पृ.66 सं.1988
3. समसामईक हिन्दी नाटकों में खण्डित–व्यक्तित्त्व अंकन– तु.रा.पाटील पृ.63 सं.1991
4. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड–4 "डॉक्टर"विष्णु प्रभाकर पृ.178 प्र.सं.1989
5. वही वही पृ.162 प्र.सं.1989
6. वही वही पृ.162 प्र.सं.1989
7. वही वही. पृ.174 प्र.सं.1989
8. वही वही. पृ.180 प्र.सं.1989
9. वही वही पृ.182 प्र.सं.1989
10. वही वहीं पृ.186–187 प्र.सं.1989
11. वहीं वहीं पृ.188 प्र..सं.1989
12. वहीं वहीं पृ.190 प्र.सं.1989
13. वहीं वहीं पृ.186 प्र.सं.1989
14. वहीं वहीं पृ.199 प्र.सं.1989
15. सिमकालीन हिन्दीं नाटक : भव्य चेतना डॉ.चन्द्रशेखर पृ.445 सं.1982
16. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड–4 ढगर–विष्णु प्रभाकर पृ.386–387 प्र.सं.1989
17. वहीं वहीं पृ.387 प्र.सं.1989
18. वहीं वहीं पृ.387 प्र.सं.1989
19. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड –6 बन्दिनी–विष्णु प्रभाकर पृ. 74 प्र.सं.1989
20. वहीं वहीं पृ.74 प्र.सं.1989
21. वहीं वहीं पृ.92 प्र.सं.1989
22. वहीं वहीं पृ.93 प्र.सं.1989
23. वहीं वहीं पृ.93 प्र.सं.1989
24. वहीं वहीं पृ.101 प्र.सं.1989
25. वहीं वहीं पृ.109 प्र.सं.1989
26. वहीं वहीं पृ.111 प्र.सं.1989
27. वही वहीं पृ.114 प्र.सं.1989

28. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-4 अब और नहीं-विष्णु प्रभाकर पृ.258-259 प्र.सं.1989
29. वहीं वहीं पृ.261 प्र.सं.1989
30. वहीं वहीं पृ.272 प्र .सं.1989
31. वहीं वहीं पृ.275 प्र.सं.1989
32. वहीं वहीं पृ.276 प्र.सं.1989
33. वहीं वहीं पृ.234-235 प्र.सं.1989
34. वहीं वहीं पृ.223 प्र.सं.1989
35. वहीं वहीं पृ.214 प्र.सं.1989
36. वहीं वहीं पृ.229 प्र.स. 1989
37. विष्णु प्रभाकर के संम्पूर्ण नाटक खण्ड-5 गान्धार की भिक्षुकी-विष्णु प्रभाकर पृ.115 प्र.सं.1989
38. वहीं वही पृ.46-47 प्र.सं.1989
39. वहीं वहीं पृ.52 प्र.सं.1989
40. विष्णु प्रभाकर के संम्पूर्ण नाटक खण्ड-4 टूटते परिवेश पृ.206 प्र.सं.1989
41. वहीं वहीं पृ.325 प्र.सं.1989
42. वहीं वहीं पृ.326 प्र.सं.1989
43. वहीं वहीं पृ.332-333 प्र.सं.1989
44. वहीं वहीं पृ.325 प्र.सं.1989
45. वहीं वहीं पृ.325-326 प्र.सं.1989
46. विष्णु प्रभाकर के संम्पूर्ण नाटक खण्ड-5 नव प्रभात पृ.70 प्र.सं.1989
47. वहीं गान्धार की भिक्षुकी पृ.97-98 प्र.सं.1989
48. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-6 श्वेत कमल पृ.14 प्र.सं.1989
49. वहीं वहीं पृ.24 प्र.सं.1989
50. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-4 युगे युगे कान्ति पृ.301 प्र.सं.1989
51. वहीं वहीं पृ.303 प्र.सं.1989
52. विष्णु प्रभाकर के संम्पूर्ण नाटक खण्ड-4 सत्ता के आर-पार पृ.411 प्र.सं.1989
53. वहीं वहीं पृ.427 प्र.सं.1989
54. वहीं वहीं पृ.427-428 प्र.सं.1989
55. वहीं ढगर पृ.351 प्र.सं.1989

56.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड 4	ढगर	पृ.351	प्र.सँ.1989
57.	वहीं	युगे युगे कान्ति	पृ.331	प्र.सं.1989
58.	वहीं	वहीं	पृ.332	प्र.सं.1989
59.	विष्णु प्रभाकर के संम्पूर्ण नाटक खण्ड-6	श्वेत कमल	पृ14	प्र.सं.1989
60.	वहीं	वहीं	पृ.54	प्र.सं.1989
61.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-4	डॉक्टर	पृ.150	प्र.सं.1989
62.	वहीं	वहीं	पृ.150	प्र.सं.1989
63.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-6	बन्दिनी	पृ.115	प्र.सं.1989
64.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-5	केरल का क्रान्तिकारी	पृ.202	प्र.सं.1989
65.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-5	वहीं	पृ.203	प्र.सं.1989
66.	वहीं	वहीं	पृ.203	प्रसं.1989
67.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-6	कुहासा और किरण	पृ.188	प्र.सं.1989
68.	वहीं	वहीं	पृ.188	प्र.सं.1989
69.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड 6	श्वेतकमल	पृ.64	प्र.सं.1989
70.	वहीं	वहीं	पृ.65	प्र.सं.1989